...द्दी चिल्वक का चित्प्रयोगमात्रस्य श... ...भावासाधकत्वात् अत
एस्तृणल्वादिजातिवचनाएवेबर्हिरादिशब्द इति बर्हिरित्याधिकरणेस्थितत्वात्
तदुक्तं वार्तिके एकदेशेपिचोदस्य शब्दो जातेर्निबंधनः तदन्याभावतस्याश्च तन्नि
मित्तां न रणामिति तत्र स्वर्गशब्दो मोक्षसाधारणएव ननु बर्हिरित्यादिशब्देष्वसं
स्कृतत्तृणघृताद्यर्थप्रयोगाभावेप्यनार्यप्रयोगसत्वात् असंस्कृतवाचिनाम्
नामस्वर्गशब्दस्यसूर्यधूवांतरवर्तिलोकसुखविशेषातिरिक्तस्य तन्नियमेनाप्रयो
गात् आकृतेव शक्तिरभ्युपगंतव्या नियमेनाप्रयोगस्य लेशव्यावृत्तशक्तेरभ्युपगंतव्यत्
त्वादेव गोऽश्वविकारोडुम्बरशब्दस्य क्वचिद्विशेषे इतरव्यावृत्तप्रयोगविशेषेणा
रूढत्वात्तस्य चोडुम्बरत्वेन पैत्रहेतुरुच्यते सः औडुम्बरणामिति बहुवचनाद्यबहु
त्वासंभवात् द्रव्यार्थरूढिपूर्वकलक्षणया समुत्पन्नया नामिकस्तोत्रसंबंधिनां त्रया
णां वा समुत्पन्नानां चतुर्णां वा उद्गात्रादीनां छंदोगानां ग्रहणमित्येतद्गुरुक्तं तथा
अहीनाधिकरणे त्रिरात्रवसान्तस्यापसदो... ...अहीनस्यत्यत्राहीनशब्दस्यानु
स्वकृतावितिव्याकरणस्मृत्या खञ्प्रत्ययेनाहर्गणसामान्यवाचित्वयाव्युत्पादितस्या
प्यहीनशब्दस्यानियतत्वेन सत्रेनप्रयोगात् अहर्गणप्रयोगविशेषत्वाभावान्नहीन
इति योगस्य रूढिपराहतत्वेन योगेन ज्योतिष्टोमे वर्तमानस्य... ज्योतिष्टोमप्रकरणादेः
... विशेषेउत्कर्षइत्युक्तं तथा पा... सामिधेनीकाण्ड धाय्यमानहविर्नि
वामसामधेनीष्विति व्याकरणस्मृत्या सामधेनीमात्रवाचित्वयाव्युत्पादित
स्यापि सामधेनीपादस्य न सामधेनीमात्रवचनत्वमपि तु समिध्यमानवत्यन्य
पिपाठः अतीपतयोगार्थवशेन सामिध्यमानवस्ये मात्र विधी पमान... नमात्र
वचनत्वं स्तुत एतत्सार्थत्वया धीयमानासु कृकसामधेनीमात्रेच धाय्यप्रयो
प्रयोगात् आपितु पृथुवाजवत्यो धाय्ये भवत इत्यादि वैदिकप्रयोगविषयेषु
पृथुवाजवत्यादिष्वेव धाय्यशब्दस्य शक्तिरिति समिध्यमानवती समिद्धवती
चोत्तमरत्नद्वायस्तुरितिपांचमिकाधिकरणेस्थितं एवं भाट्टादिकं सर्वं विरुद्धं न स्वर्गप्र
देतदुक्तरीत्या प्रयोगाभावेपि शक्तिसंभवेन उद्गात्रादिशब्दानां कर्तृत्वविशे
षादिषु रूढेरकल्पनीयत्वात् इतिचेत् न यं पदसिर्वात्मनात् इतिरिक्ते स्वर्गप्रयो
गोनस्यात् इतत्यावत्या रूढिरभ्युपगंतव्या स्यात् अस्ति हि तत्रापि प्रयोगः तस्य
...पः कोश स्वर्गोलोको ज्योतिषा ... यो वेलां वलसो वेद तेन धीः प्र...
...दिः स्वर्गंलोकमित उर्ध्वं विमृ... अपहत्य पाप्मानमनंते

ज्येयेगतितिष्ठ इति तेनराजकश्री [illegible] रूपकतत्वलोकादि श्रुत्यध्यान
शाश्लेषुश योगदर्शनात् सौराणि [illegible] परिकल्पित स्वर्गशब्द इदं सांख्यपरि
कल्पिताव्यक्तशब्दरूढिवदनादरणीयत्वात् तस्मिन्ने वृषकर्त्तेति यत्वे केन
स्वयमेतत् संविदित्वा पश्यन्विद्वांसो [illegible] मुले नाचिकेतसमन्युयाश्चन्द्र लः ओगाः
लो ५ स्वर्गे लोके काति गोमोदते स्वर्ग इति मंत्रे कर्मस्थान समुद्र यसाध्यवाचकत्वाच्च
च मानस्य स्वर्गलोक शब्दस्य सूर्यधृवांतरवर्त्ति लोकव्यतिरिक्त वैराज
पदवाचकत्वं तथा परैरपि व्याख्यातत्वाच्च ननु सूर्यलोकोर्ध्ववर्त्तिलोकत्वस्ये
व प्रवृत्तिनिमित्ततया तस्य च वैराजपदेपि सत्वात्कथं नामुख्यार्थत्वमि
ति चेत्तर्हि भगवल्लोकेप्यूर्ध्ववर्त्तित्वाविशेषेण मुख्यार्थत्वानयापात्
स्वर्गापवर्गमार्गाभ्यां इत्यादिवचनहारस्य श्रीमत्परिव्राजकन्यायेनोपपत्तेश्च अस्तु वा
अमुख्यार्थत्वस्वीकारः मुख्यार्थे वाधकसत्वात् किमत्र वाधकमिति चेत् श्रूयतां मि
वृधानेन स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति [illegible] स्वर्गेपि पात भी
तस्ये सुकर्मीणां केन पापेन वा स पतिस्वं व्याप्नोतीति भीत्यभावः प्रतिपाद्यते स
चापकृष्टधार्मणं [illegible] स्वर्गनिष्ठानामपि [illegible] न एव संभवति नात्र
लोप २५ तेन जरया विभेतीत्यनेन स यदि पितृलोककामो भवति संकल्पादेवास्य पितरः समुत्तिष्ठं
ति तेन पितृलोकेन संपन्नो महीयते इति श्रुतिसंदर्भप्रतिपादितसत्यकामस्
य संकल्पस्य प्रतिपाद्येन [illegible] ध्या [illegible] पहतपाप्मत्वादि [illegible]
गुणाष्टकाविर्भावस्य हृदानोपमानन्तथा न स्वेव हत्यहरासंभवेपो [illegible] स्य स्वर्ग
लोकगतापेक्षक जरामरणाद्यभावस्य कास्यानुचित [illegible] एव स [illegible] विध्वंसा
धिकारानुपादेरिति कर्त्तव्यता कामसु सोपादि विहितभावश्च सु इति कर्तेताको भा
पां वैतानिककर्माधिकार [illegible] विहितत्वसामान्यात् [illegible] दवैष्य [illegible] पौर्णा
मासिकी तिकर्त्तव्य उपतिष्ठते उक्तं च [illegible] पिपा वैदिकी विकत्वेन सामान्ये नोपतिष्ठ
ते उक्तं च [illegible] लौकिकीत्वसमानत्वात् लोपस्थाप्या हपेक्षितेति न च पदपंपूपंमुप
स्पर्शे देशने वा पापिति [illegible] प्यादिति विहित [illegible] पत्ते [illegible] विगतवत्तस्य वैदिक सामा
न्येन विहितस्य वैदिकपूपस्यर्शने मिनत्कत्वमेव स्यान्न चेष्यपतिः लौकिके दोषसं
योगादि नावमितो धिकर्णोविरोधप्रशंगादितिवाच्यं [illegible] वैयस्य दुरित्र भावेचं
५ [illegible] पोनैस्यन्ति इति प्राप्ति [illegible] पंस्पर्शदे [illegible] वादिति व्रू
यादिति [illegible] मेवविहितस्य प्राप्ति सिद्धत्वा [illegible] तत्संको [illegible] लौकिकस्पर्शविष
यत्वावगमे [illegible] वैदिकविषयत्वासंभवेप्यसति वाधके वैदिकरा [illegible] नेनत्व
[illegible] नातीतित्र सिद्ध [illegible] सापि [illegible] सुहृदादि [illegible]

शोवोपनानकनोलवगठनोभयभागवतस्यापनेवावितम इत्थंचसर्वथाश्रीम
भागवतस्यार्षत्वमस्त्वेवेतिसर्वेषांराद्धांतः ॥ औरश्रीमद्भागवतनामकिस्काहै येह
तोप्रलापकस्यावितकिसीकाशगोश्तेपडेहुवेपानिकेहगनेमेपडेहुवेविद्व
2 प्रपुरुषकोकहदियाजैसेमाचकेमरेहुयेराजाकेसामनेमहयसेसेपुरुषकोतुम
कोनहोवोजिसमनेसर्पकोरवेगंडमरगेहैंथेनमेगनिकलासोदिहिप्रचित्रदु
रुषक्यानहींकहदेताहै ॥ वादीकथनम् ॥ किञ्चतद जन्माद्यस्ययतोन्वयादितरत
श्चार्थेष्वभिज्ञास्वराडित्यादौवेदनिर्णीतार्थकुतरशतरश्छुद्धवेदादिभ्योविरोधात्
कोस्तिविरोधः सर्वविरुद्धमेवकथनं ॥ नानार्थंनभिन्नार्थंनासदर्थंनचाधिकं
नन्यूनंकस्यचिद्व्युत्क्रमाभिहितंनच ॥ असत्यमतिसत्यंवासुक्ष्मंसत्यप्रयोजनं
एतद्दोषविरहितंवाक्यंप्रज्ञाप्यंलेखनीयञ्चेत्युक्तम् मार्कण्डेयपुराणेएतद्दो
षसहितंवदतिप्रमत्तगीतंभागवतंऽतोवाच्यनीयंनकदापीयञ्चः ॥ भाषा ॥ भाषा
वादीकहताहैकेतुम्हारीभागवततो ॥ अशुद्धहै जिसमेजन्माद्यस्ययतोन्वयादित
रतइत्यादिवेदअरश्लोकलिखदियेयेह वेदविरुद्धहोनेसे ॥ अशुद्धहैकहतेहैकेवे
दइयादीइसमेविरोधक्याहै ॥ तोकहताहैकेसमग्रभागवतवेदविरुद्धहै क्यु
ननानार्थंजिसमेनानाऽर्थनहोवे ॥ औरजिसमेभिन्नार्थनहो ऽसदर्थजिसमेनहो
जिसमेअधिकार्थनहो ॥ जिसमेन्यूनार्थनहो ॥ औकस्यचारावेनहो ॥ व्युत्क्रमेउल
टानहो ऽमिहितनहोना ॥ सत्यनाहि ॥ सत्यसूक्ष्मंसत्यप्रयोजनं ॥ येहदशदोषरहि
तवाक्यउच्चारणकरना ॥ औरलिखनाचाहिये येहमार्कण्डेपुराणमेलिखाहै ॥
सोइनदशदोषवालीभागवतहै सोअप्रमत्तगीतहै इसवास्तेनकहनेकेयो
ग्यहेऔरनसुननेकेयोग्यहे ॥ अबइसकाउत्तरसनातनधर्मवालेदे
तेहैंसोसुनो ॥ वाहरधन्यहैस्वामीजीकीबुद्धी ॥ अगर ॥ असीबुद्धीवाले पृथ्वी
औरपैदाहोजातेतोसायदकलकीअवतारको ॥ अपनीप्रतिज्ञाभंगकरके
अबहीअवतारधारणकरनापडताथायहै अजी ॥ असीक्या ॥ आपदा ॥ आ
पलोगोंपरपडगइजोइवतेहुवेसरवसीपरहाथडालतेहोक्याखूब
श्रीमद्भागवतमेदशदोषपैदाकरदिये येहदोष ॥ अपनेमनमेअ
पनेघरमेपैदाकियेहोंगे ॥ अबअवअसीसोलो ॥ औरसनातनधर्मो
पदेशकोसुनोफिर ॥ आपदा ॥ असा ॥ अशुद्ध अरथ अज्ञानफेंकनाचाहिये ॥
देखियेमार्कण्डेयपुराणस्थंनानार्थमित्यादिदशदोषवालीश्री
मद्भागवतकोबनाया परंतु येहस्वामीजीनेनहीजानाकेयेहवातकह
नेसेहमारेधरमे ॥ आगलगजायगी भलाभागवततोदशदोषवालीहै
अबयेहकहने ... नहींहो ... जीनयार
... लिखनाहोगा

देखिये अज्ञानमानंदं ब्रह्म अहं ब्रह्मास्मि तत्त्वमसि महावाक्य में लिखा है
और अयमात्मा ब्रह्म प्रज्ञानं ब्रह्म इत्यादि वेदे मानियाद्भाति यं
त्वमगमः शास्त्रसिद्धमाः नीलमाध्य कौचाम्भयुगारेकमल्लोकाम
मोहितामित्यादौ वाल्मीकि विरचित रामायणेष्व कंगनदीजलं केशव
नारिकेलमित्यादौ माहांभान्ति है रविशापुराणों स्य प्राद्भुर्भावादौ चा
सि नत्रापि तत्त्वो न तस्य मतेऽभ्युदयाद्भमारस्य स्यात् ॥ वसुजीपह
लेतो आपके कथनानुसार भागवत में दोष आया था अब इस
आगलगीको काहे से भूलाती गजराजागतो सहि पहले तो तुम्हा
रे कहने से पंचदश आसे माहां वाक्य में दोष आया ये हावि अच्छु
हुआ फेर और फेर अयमात्मा कहने से वेद में दोष आया ॥ मानि
याद्भातिरं त्वमगमः शास्त्रतोः समाः ये हवाल्मीकि रामायण में
दोष आया ॥ नदीजलं केशव नारिकेल ये माहांभारत में दोष
आया और हरिवंश में का प्रादुर्भाव भया है अब भागवत
में तो दोष आया था तुमारे कहने से तो इन में विरोध आगया है ॥
अब इस दोष को न मानेंगे तो जिसजी हां से भागवत में दोष घटाये थे
उसजी हां का क्या इलाज किया जायगा वाह फिर जैसे दोष अपने
कहने इस तरह मनका हमको तुम्हारी बुद्धि को जाना लि
या है आपने इतने दोषों को लिखा हुआ तो देख लिया लेकिन ये
नहीं जाना के ये दोष कौन से शास्त्रों में देख के कहे हैं और न कि
सी से पूछा पूछें कि से जो विद्या गुरु आलस्य के उन से तो वैर कर
लिया पूछें बेचारे किन्हों से भाइ सनातन धर्म लो स्वामी जी का
चित दोष नहीं है इसको कर दश दोष भागवत में बतला
दिये हैं इसको ये खबर नहीं है के ये दोष कहां घट नहीं ना है
बिना जाने अपराध होजाता है इससे दृष्टांत देता हूं सो सुनो एक स्वा
मीजी का नुकसा लिखा हुआ मकान के कासे पंडित पास ले गया था
इसे दवा पंडित लगे बतलाने के नाइ एक नौका मफल और पोहकरमूल
काकडासिंगी ॥ कंटकारी का अर्थ पंडितों ने कहे हैं कंठकारी ये कंटकारी
के टका जोको इसका भरी दुश्मन को ये हैं सुना लगे कहने के भाइ
सुनके पालेना लो पंडित जी को ये नहीं जाना के ये कंटका
री कंटाई को नाम है वा अर्थ न का लत
है

पर्वणिलिखितम् तर्हि कथं व्यासः शुकं माहाभारतमध्यापयदिति नात्र शंका
वसर इति चेत् शुकेपदस्य छायाशुकेत्यर्थे शान्ति कल्पनाया मानाभावः न
च शांतिपर्वणि शोऽनुयात्शुक पदस्य ताद्दृशार्थः कल्पते इति चेत् विनिगम
नाविरहात् एतदनुसारेण शान्तिपर्वणि तु या शुककथा सा कल्पांतरीये
त्येव भारते शुक माहाभारताद्दिवर्णिता दशकस्य भवा शुकाच्छाया शुकोध्याप्या
पंक्षकः ॥ भाषा ॥ धन्य हे ऐसी कथा निद्रा है जिसे कानके पास ढोल बजने
सेनहि जागते ॥ अरे माहाराज छाया शुकतो पहले रहस्य थे फेर विरक्त हुवे
राजा परिक्षितके आये पके आनान्तर वि पहले परमहंसावस्याको प्राप्त होगये
थे परमहंसावस्यामे प्राप्त होकर राजा परिक्षितके प्रति उपदेश किया देख
ये माहाभारतके शांतिपर्वमे कथा लिखता हे द्वैपायन पूर्व इत्यादि वा
क्यसे कथा प्रघटहोती है भारत शांतिपर्वमे द्वैपायन वेदव्यासजी माहा
भारतको पहले शुकजी अपने पुत्रको पढातेभये बादमे औरभी अ
पने शिष्याजोकि थे उनको पढातेभये साठ लाख संहिता नीमाहां
भारतको वेदव्यासजीने बनाया पूर्वानुभव प्रघटकिया भावार्थ
ये हैकै ये ह चारो वेद अपने अंगसहित ६ शास्त्र १८ पुराण ये ह
सभ अनादि है जैसे ये ह जगत प्रलयको प्राप्त होता है फिर जब ईश्वर
कि इछा का नाम जगत प्रकृति है जब ईश्वर कि इछा होति है तब हि
जगतको स्रजन किया जाता है वाहां जगतका कर्ता ब्रह्मा नाम
करके प्रघट होजाता है जैसा जगत् ये ह अनादि प्रकृति पुरुष
पहलेसे था वसा हि तद्रूप तदाकार ब्रह्माने प्रघट कियाजि
सप्रकार ब्रह्माने जगत अनादि अवछिन्न धारारूपको भगवा
दिछासे प्रघट किया इसी प्रकारसे पराशर के पुत्र वेदव्यासजी
ने वेद वेदांग षड्शास्त्र पौराणादि जो अवछिन्न धारा रूप
सनातन से जुगजुगांतरसे उत्पन्न हुवे चले आते हे इन्हको व्या
सजी ने के पुत्रने प्रघट किया इसी वास्ते वेद शास्त्र पुराण कर्ता
वेदव्यासजीको कथन किया है ॥ जो कोइ मंदमति येह बाता कि
है के वेदतो परम्परा अवछिन्न धारारूप चले आते हे और पुराण
कोकुछ मत लिखनहीहे तो उसमान्ति मंदको वेदप्रमाण औ
र श्रुति प्रमाणसे समझाना हे सो आप लोककों विध्यान धरके
र श्रवण करना चाहिये देखो के पुराण सनातन परम्परा
सेन हाते तो [illegible] वेद [illegible] [illegible] चा

सामवेद

इतिप्रकारस्वामीजीनेवेमेह्वात नहीं जानी के ये दोष कहां देखे जाते
हे सो स्वामीजी वस्तुतः रागद्वेषादि दोषवत्त्वं काव्यनकादि ग्रन्थो
क्तत्यतकद्वादि दोषवत्त्वं चानार्षकाव्यनाटकादि ग्रंथेष्वेव द्रष्टव्यं
न त्वार्षग्रन्थेषु वेदस्मृतिपुराणादिग्रन्थेषु भ्रान्तिरभीप्सितमिति ॥ किंबहु
ना ॥ भाषा ॥ सो स्वामीजी येह द्वेषादि दोष जो हे सो काव्यनकादि ग्रन्थों
मे क्त्यतकद्वादि दोष जाननै अनार्ष ग्रन्थ काव्यनाटकादि ग्रन्थों मे जा
नना ॥ और आर्ष ग्रन्थों मे येह दोष नहीं देखने येह अगनी पुराण
दिकों वो सो सङ्कल्प होता है बहुना किम् ॥ वादिकथनम् ॥ कथं नहि श्रूयते
लवानि भागवतं परीक्षितं प्रति शुकेन नोक्तमिति कुतो नोक्तवान् ॥ शुकस्तु पूर्व
मुखमोक्षं प्राप्तवानिति महाभारते शान्तिपर्वणि लिखितम् ॥ भाषा ॥ वादि कह
ता है के किस प्रकार शुकदेवजी भागवत को परीक्षित राजा के प्रति उपदेश करते भ
ये येह वाली तुम्हारी असम्बद्ध है शुकदेवजी तो पूर्व से पहले ही मोक्ष को प्राप्त हो
गये उपदेश भागवत कहां से करते येह भारत के शांतिपर्व मे लिखा है ॥ नहि
श्रावितं शुकेन मोक्षं कृतानिति मतिस्तु [illegible] व्यासप्रोक्तमस्ति वाने
व अम्बरीषशुकप्रोक्तं नित्यं भागवतं शृणु ॥ हयग्रीव शुकप्रोक्तं नित्यं भाग
वतं शृणु इति सर्वमिदं कथनमशुद्धमेव ॥ जवाब ॥ तुम कहते हो अम्बरीष शुकने
शान्तिपर्व मे शुकजी मोक्ष को प्राप्त भये तो फिर व्यास शुकने उपदेश कैसे
या है ॥ वादि कहता है सत्तो ब्रह्मस्थितेन [illegible] ॥ जवाब ॥ तो फिर व्यासजी
ने भागवत को कथन क्यों किया या नहि ॥ वादि कहता है के नहि येह जो लिखा
है के हे अम्बरीष शुक कथित कथन करि हुई भागवत को नित्य श्रवण कर
हे हयग्रीव शुकदेवजी की कथन करि हुई भागवत को नित्य श्रवण कर
येह जो कथन किया है सो तो सम्पूर्ण मिथ्या है ॥ अत्र सनातनधर्मज्ञा
जवाब देते हैं ॥ अथ शुकः पूर्वं गृहस्थोऽपि पश्चाद्धरिकीर्तनं परीक्षितराजोप
केशानां पूर्वमेव परमहंसावस्थां प्रगतत्वात् राजा ने प्रति श्रीमद्भागवतमुक्तवा
निति किंच महाभारतस्यादिपर्वणि द्वैपायनः स्वं पुत्रमध्यापयच्छुकं ततो
ऽन्येभ्यो नुरूपेभ्यः शिष्येभ्यः प्रददौ विभुः षष्टिं शतसहस्राणि चकारान्यां संसं
हिताम् त्रिंशच्छतसहस्रं च देवलोके प्रतिष्ठितम् पित्र्ये पञ्चदश प्रोक्तं गंधर्वेषु
चतुर्दश एकं शतसहस्रं तु मानुषेषु प्रतिष्ठितं नारदोऽश्रावयद्देवानसितो
देवलः पितॄन् गंधर्वयक्षरक्षांसि श्रावयामास वै शुकः ॥ अस्मिंस्तु मानु
षे लोके वैशंपायन उक्तवान् शिष्यो व्यासस्य धर्मात्मा सर्ववेदविदांवर
इति श्रीवेदव्यासः पुत्रं शुकं महाभारतमध्यापयदित्युक्तम् तत्रापि तत्र
पाण्डवानी [illegible] भारते

वेदव्यासजी स्वयं ईश्वर विष्णु परन्तु मर्य्यादा को भंग न करने को लि
के आपने पुत्रोत्पत्ति को लिये उद्योग कर तेमय देखके वेदव्यासजी अप
ने मन में विचार कर अपनी स्त्री जाबालि नामक कन्या को संग लेकर वे स्वान
साश्रम में तप करते भये तब इति पुराणं मंडन समाप्तम्॥

धर्मनिर्णयः केभ्यः चतुर्दशविद्याच शास्त्रेभ्यः कर्त्तव्यः इति
जिज्ञासायां मतरमाह याज्ञवल्क्यः आचाराध्याये तीय ३ श्लोके
ऋग्वेद यजुर्वेदः सामवेदः अथर्ववेदः शिक्षाकल्पो व्याकरणं ज्योतिषं छ
दो निरुक्तयः मीमांसा तर्कशास्त्रं च पुराणं धर्मशास्त्रं के विद्याश्चतुर्दशेताश्च
पुरुषार्थ निरूपकाः इति वेदांतस्य मीमांसायामंतर्भावः॥ वैशेषिकस्य तर्के सांख्य
पातंजलयोश्च वैष्णव रामायण भारतादीनां धर्मशास्त्रेष्वंतर्भावः॥ पुराणं च॥
ब्राह्म॥ पाद्म॥ स्कांद॥ मार्कंडेय॥ शैव॥ वैष्णव॥ नारद॥ भागवत॥ आग्नेय॥ भविष्य॥
॥ ब्रह्मवैवर्त॥ लैंग॥ वाराह॥ कौर्म्य॥ मात्स्य॥ गारुड॥ ब्रह्मांड॥ भेदाद्दशाष्टधा॥१८॥ पद्म
वाशिष्ठ॥ लैंग॥ नारसिंह॥ नंदीय॥ नारदीय॥ वामनीय॥ हंस॥ तत्त्वसार॥ दौर्वास॥
शैव॥ धार्मिक॥ कापिल॥ मानव॥ वारुण्य॥ रेणुक॥ वायवीय॥ कालीय॥
माहेश्वर॥ पाराशर॥ मारीच॥ भार्गवादि भेदादुपपुराणानि नानाविधानि॥
मनु॥ याज्ञवल्क्य॥ विष्णु॥ यमां॥ गिरस॥ वशिष्ठ॥ दक्ष॥ संवर्त्त॥ शातातप॥
पराशर॥ गौतम॥ शंखलिखित॥ हारित॥ आपस्तम्ब॥ उसनस॥ कात्यायन॥
व्यास पन॥ बृहस्पति॥ देवल॥ पैठिनसी प्रभृतिकृतानि बहूनि धर्मशा
स्त्राणि॥ तस्माच्चतुर्दशैव विद्या॥ ननु आयुर्वेद॥ धनुर्वेद॥ गांधर्ववेद
अर्थशास्त्र भेदादुपवेद चतुष्टयमप्यस्ति॥ कामशास्त्रस्यायुर्वेदांतरभावः
नीतिशास्त्र॥ शिल्पशास्त्र॥ अश्वशास्त्र॥ सूपकारशास्त्र॥ चतुःषष्टी
कलाशास्त्राणामर्थसास्त्रेंतर्भावः॥ तस्माद्दष्टादशैव विद्येति॥

वाल्मीकि रामायणे॥ अयोध्या कां॰ सर्ग ११० पत्र ३१२ श्लो॰ क्रुद्धमाज्ञाय रामं तु वशिष्ठः प्रत्युवाच ह॥ जाबा
लिरपि जानीते लोकस्यास्य गतागतिं॥ निवर्तयितुकामस्तु त्वामेतद्वाक्यमब्रवीत॥ इमां लोकसमुत्प
त्तिं लोकनाथ निबोध मे॥२॥ सर्वं सलिलमेवासीत्पृथिवी तत्र निर्मिता॥ ततः समभवद्ब्रह्मा स्वयं
भूर्दैवतैः सह॥३॥

सर्नांवल्लमंत्यादि मनुः इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेदिति न वेदस्य
वहराभक्षेतिन लक्षणकं परिपूर्णस्याकेन [illegible] वत्नयस्य अपुराण्यपूर्णयुज्यते पूर
राणानुपूर्व्यमिति चान्यत्र भविष्यपुराणे [illegible] सामान्यवीस्वः कांसमाय
[illegible] तथा भारतं पंचमो वेद इत्येव [illegible] पुराणानि च सर्वाणि वेद [illegible]
विदो विदुः सनक्रमागमंत्रमानाज्ञानि [illegible] वार्थं तरति पुराणानि नामापि [illegible]
शास्त्रवदौ लब्धयत्नं माध्वीदिनवज्ञानावृत्तौ एवं वारस्य महतो भूतस्य निश्वसित
मेतमेतदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वांगिरस इतिहासः पुराणमित्यादि ॥
अपरार्के मत्स्यपुराणे मत्स्य उवाच पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृ
तं अनंतरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः पुराणमेकमेवासीत् तस्मिन् का
लांतरे मर्त्ये च त्रिवर्गसाधनं पुण्यं शतकोटिप्रविस्तरं निर्दग्धेषु च सर्वलोकेषु
दैत्येभ्यः [illegible] पुराणानि दशाष्टौ च सांप्रतं तद्द्वापि देवलोके शतकोटिप्रविस्तरं
मिश्र [illegible] सनम इत्यादि [illegible] स्यवायवे [illegible] संहितायां [illegible]
संक्षिप्य चतुरो वेदांश्चतुर्धा व्यभजत प्रभुः व्यस्तवेद [illegible] लोके वेदव्यास
इति स्मृतः पुराणमपि संक्षिप्तं चतुर्लक्षप्रमाणतः [illegible]
भर्त्यलोके [illegible] कोटिप्रविस्तरं [illegible] शवं च [illegible] हाति [illegible]
चिद्धि सपुत्रस्य कथनमेव अत्र गलितमिति परं [illegible] ख्यादिरूप
[illegible] परंपरया [illegible] स्वं [illegible] मेदावलीर्णं ननु [illegible] स्फुटितेमि
त्यर्थकम् अत्र शब्द [illegible] भागवतेन [illegible] सं [illegible] कस्याद्भवं दृष्टि
मितिश्रेयं तत्यसे गलितमित्यनेन [illegible] केमलेनाधिकस्याद्भवामिति श्रेयं भूसावं चपान
तेभूदाससपक्षे सुनिश्च [illegible] र्थत्वेनाधिकस्याद्भवामिति [illegible] नमेवाद्युक्रम
मितिवक्ष्य गलितमित्यत्र श्रुतमिति कथ्याचेन्न [illegible]
भाषासुकोत्पत्तिकथनं ॥ हे ख्येयेजो सुकदेव राजा परीक्षत के प्रति श्रीम
द्भागवतको उपदेशकर्ता भया उसकि उत्पत्ति सुनो जिसकालमें कलियुग
प्रवेश भया तिसकालमें श्रीवेदव्यासजो जगतकर्ता कृष्णद्वैपायन भगवान्
सर्वत्र ऋग्यजुसामअथर्ववेदोका संग्रह जिसमें असा जो श्रीमन्महाभा
रतको उत्पन्न कर्ते भये यानि रचते भये वोह वेदव्यास ब्रह्मचर्य्यसी परि
भ्रंश होकर यानी ब्रह्मचर्य्यको त्याग कर माताके वाक्यमें उपस्थित होकर
यानी माताके वाक्यको मानकर पितृऋणमानं अपने पितृऋणको
यानी पितृऋण पितृपक्ष श्राद्धादिकर्म पिंडदान तर्पणादि यसे जिससे
दिया हुवा अन्नजल पितरोंको पहुंचता है किसका दिया हुवा है पुत्रका पुत्रका
दिया हुवा है येह विचार कर माता सत्यवतीके वचनको मान पुत्रोत्प
त्तिके लिये विवाह जाबाली नाम कन्याकि साथ करते भये

(५

श्रवणस्याविर्भावोनैद्वारावमांग परः गृहीत्वैनंजातभुवंनि क्रामं कुरुपुत्र
क गर्भवास त्वंब्रूहिमाधनंगन्ति होपमेयमायाखलास्यनादिलेभ्यनामा
त्वदीयावद्यातिमानयादिगर्भनि नेहाययास्यातिसंप्रतिवादि: अतिभूरत्व
मत्र आत्रलाविश्वनखिलंतवमाय या वृवकुंत्वयैवभवदः खलरूनसमे वे त्या
दि सूतउवाच इत्यंनदीयवचसा भगवान्प्रनीत: प्राह प्रकृसप्रानवेरिति
वाचमेश: मन्वायथानभावितानि संप्रयोगोयोगा रतोगकुरुनि क्रमणा
विसंकेतानसमा समधु ने वम प्रसादा जीवन्न त्वासमहीय मोक्ष
मंगयलंवरतिष्ठन धावह द: सयोगवकुं वियोग मावयोग करंगया तद्
वायणानसानमनुविश्यततत्प्रर्ता तस्मात् व्यतिमयावानिगतिक
योगा स धद त्वमतिवय वयो: पुत्रस्य व्यासहरस्य जननीमयस्य संप्रत
य तत्प्रपतद नसंवादावतरम श्रीभगवानुवाच व्यासत्वदीय
तनय: श्रीकवयानत्वंत्रतवभवपुत्र श्रवखनाम्ना हर्षेतनस्य
तितपापिनमथयदयंस्पृष्ट: प्रोवाचनवत्या हरिमायमोह पापी
नयमप्यत्रकुरुस्व वावयंच वासयंपरनमान पतोभुवामि त्यादि
इत्यं जगवयुरु: पुरुषोत्तमस्त संबोध्य बोधनिधिमाशु ब्राविरुद्ध:
श्रीमद्भागवतावधिजवर्ग द्वारकांसुरपुरंद्रतमाजगामेति
श्रीदेवी भागवत प्रथमस्कंधे सप्तविंशतिअतिश्रीमद्भागवतम्भ कथानां
श्रीदेवी
युक्तातात स्यमदेवेवस्यति चेद्रपुराणादा क्रमेण वस्य
वोपुराणानंतमप्रमाण्यं स्यात् परस्परादि विरुद्ध त्वान्मतंभाति
दीनामपोति विडि एक व्वना न भिनतिकेवहना ॥ निगमकल्पतरो
दीनामपोतिविडि

गलितंमित्यादि ॥ अत्र वेदनंदा कर्नाहिपातिलमितिवक्ये गलितमित्यश्रु
ॐ भाषाकहतेहैकेदेखयेनिंदककादिकाकथनहैकेतुम्हारे भागवतमेंकैसे
अशुद्धपदलिखदिये निगमकल्पतरोर्गलितंमित्यादि श्लोकालिखे
इससेअघटहोताहैकेवेदरूपजोकल्पवृक्षहैकेसाहकेगलितफलगलितहैफ
लजिस्कापानीगलाहुवाहेफलजिसकोदेखयेइससेवेदनिंदाअघटहोतिहै ॥
(जरावसनातनधर्मकितर्फसे) बा॥ यह क्याखुब असीहिबधिककेजनंतध
र्महीननिंदकपुरुषोंकोअयनितर्फवनगयानिगमकल्पतरोर्गलितंमिति
श्लोकेन श्रीमद्भागवतस्य माहात्म्यं स्ववेदकल्पतरुत्स्य फलरूपत्वं वर्णितं
मास्यवेदस्य ... अतियादते वेदरा: कथादिनागमत पुराणानां नामापि
वेदोपनिषदः ...

वोचनंतत्रलंस ... नामिति

दि

श्रीमद्भागवतस्य ...

योग्यमृतस्य चलितपाप

ॐ मंत्राभाष्ये कालयुग्मे व्यासवक्त्रे योजनगन्धेन माहं भारतमाख्यानं सर्ववेद
र्थसंग्रहमित्यादि तथा अनेन ग्रन्थपरिभ्रंशा [illegible] नावयाद्‌ पालिते स्ववंशविनाश
[illegible] नां रूपवर्त्ते तु मत्सर्पं चिंतितं मनसा [illegible] भार्यां जाबालिकथ्यकाम
विटकाश्यां ददौ तस्मै सोपि वैखानसाश्रमी [illegible] तया सह तपः चक्रे गर्भो निःस्थि
धा [illegible] गर्भो भवत्‌ स्मात्‌ सां सवत्‌ कथयाः कन्या [illegible] शुभां पश्य वै [illegible]
शुध्युतिर्वृद्धिज द्वादशा [illegible] निज्ञानानि [illegible] तस्मिन्‌ [illegible]
वद्वेदार्थसंग्रहं पुराणं भारतं धर्मशास्त्रं [illegible] द्विज [illegible] गर्भ
[illegible] हृदि पाठ्य गर्भ संख्यापि [illegible] भगवानिति [illegible] गर्भ [illegible]
ताइत्यादि अथ [illegible] मवर्षे कसंहृ पाय [illegible] मुनिः उपाविश्य [illegible] गर्भ
माम [illegible] सामभिः संबोधयामास नादवचो [illegible] भक्तिभाविते: व्यास उवाच प
त्वं मदीय [illegible] मधुनातिकालमाविश्य धीः व्यासगर्भे तत्याय [illegible]
न [illegible] निष्क्रमसि नाम कथं नमः [illegible] किं मातृये व्यासि वेदकं [illegible] स्वमेतास
गर्भ उवाच इत्यादि [illegible] सुरयसे इत्यादि [illegible] तेषु सर्वेषु [illegible]
[illegible] किम संप्रतं मानुषा भूत्वा जठरस्य [illegible] स्थितः [illegible]
[illegible] गर्भो निष्क्रमणं बहिः नात्मानं [illegible] दिनाचितो [illegible] भापय
त्यादि व्यास उवाच यथेव मत्स्य [illegible] नारकिनं [illegible] हं मेकं
नरकादिह गर्भवासात्‌ सम्यक समाश्रय [illegible] विवेकभवमलिचनावदेव वैराग्य
रुनाथमुभयाकुरुवाविवेकम गर्भ उवाच [illegible] विवेकभव [illegible] देवस्य चिन्तनि
[illegible] संस्पर्श [illegible] चनावत्त यावत्‌ [illegible] तिर्जंतु [illegible] निबद्धा देवस्य [illegible]
[illegible] इत्यादि व्यास उवाच [illegible] भविष्यति [illegible]
वर्क [illegible] निर्जमम [illegible] इत्यादि [illegible] मभावेनाप
तिभूसुरोर [illegible] विषये यदुवं [illegible] गर्भ [illegible]
[illegible] मयोति विनिश्चयो मे इत्यादि [illegible] इत्युक्त्वा नदीय वचनं द्विजसत्
[illegible] व्यासोति दुःखिन्नमना [illegible] हरि [illegible]
शनेतु भीवद्‌ [illegible] मतिर्भवाब्धेः [illegible] कृतेन [illegible]
नाविश्य सुहृदा द्विज देवतेन प्राप्ता [illegible] मात्मदाद्‌ स्थमसेन व्यासो न्यवे
दयद्द्वारा [illegible] पेदे कर्तव्यमेतदिह नाम [illegible] गेह [illegible] पवित्रयितुम [illegible]
वागतस्य तीर्थस्य जंगम [illegible] तेन [illegible] नपवेरिति चाह वाच्च
नाराय [illegible] चिंतिभाजनमेव [illegible] द्विजवरः [illegible] कः प्राह [illegible]
विश्वपुन [illegible] किं चित्त [illegible] गर्भसंशंकी व्यास उवाच [illegible]

देखयेवेद व्यासजीने ६० लाख पाठ महाभारत का ग्रंथ ठाना था
जिसमे ३० लाख तो देवलोक में है और १५ लाख पितृलो
क मे १४ लाख गंधर्वलोक मे और १ लाख मनुष्यलोक मे है
नारदजीने देवताओं को सुनाया तब भये व्यासजीने शुकजी को भ
ी उपदेश किया शुकजीने पितृलोक गंधर्व यक्ष राक्षसो
को सुनाया मानुषलोक मे वैशंपायन जी को सुना
या जो व्यासजी के शिष्य सर्व वेद विशारद थे श्री वेदव्या
सजी अपने पुत्र शुकदेव जी को महाभारत पढाते भये
फिर तुम कहते हो युद्ध से पहले शुकदेव मोक्ष को प्राप्त होग
ये येह शांतिपर्व में लिखा है येह तुम कहते हो भला जो मोक्ष
को प्राप्त हो जाते तो व्यासजी ने शुकदेव अपने पुत्र को महाभा
रत कहां से पढाया इन्ह का शुकजी को पढाना शांति
पर्व से सिद्ध होता है भला जी पढाया शुक को व्यासजी ने मा
हाभारत पढाया था हां इं का का [illegible] नहीं है शुकपरकाता छा
या शुक कहया है शांति कल्पना या मानाभाव: ननु शान्तिपर्व को
स्त्रीधर्म शुकपरकातादर्श गर्य जानना वे निगमनाविरहा
तरात् तनुशाश्रेण शांतिपर्व णि प्राप्ते पादितस्यारण्ये संभवस्यद्
कस्य कल्पांतर विशयत्व कथं न हि मानते वंधु के छाया शुक येह
अर्थ करो कि विशेष ये महाभारत व्यासजीने पहले अपने पु
त्र शुकजी को पढाया येह महाभारत के महिमा अतिशय क
है जो वर्णना की है तिसका विच्छेद हो जायगा तिस वास्ते या
हां शुक पर जो है सो छाया शुक पर त्व नहि है वंधु के शांतिप
र्व मे जो शुक कथा है सो तो कल्पांतरीय है विशेषता वर्णे तो मा
हाभारतादि वर्णितादर्शसं भवा शुक छु का छुता या शुका द्रा
न्यो यं शुक सद्य घट भया कि शिशिदानाक वैडरण्ये उत्पन्न हो
नेवाला जो शुक और छाया शुक ते अन्य होता है शुक है

श्व· त· प· २ स्वदेहमरण्यं कृत्वा मनगाद [illegible] रण्यं ध्यान निर्मथन [illegible]
[illegible] निगूढ वत्त [illegible] [illegible] योध [illegible]
धिगम्यते [illegible]
[illegible]

क्युंकरलिखतेप्रमाण सा० साखा० छांदो० पत्रपृ४॥ पं० ग्र॥ इसमे
लिखाहै। सहोवाच ऋग्वेदं भगवोध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पंचमं वेदानां वेदं
व्याकर्णं पित्र्यं राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं
नितीशास्त्रं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां नक्षत्रविद्यां सर्पदेव
जनविद्यां मेतद् भगवोध्येमि। येह ऋचा है देखयोजी॰ भग
रजो पुराण वेदरूप नहि होते॰ ओर सनातन परम्परा प्रवाह
धारारूप न होते तो इस ऋचामे पुराणोका नाम कहां
से आजाता॰ ओर देखये सर्वोपनिषद सारभूता भगवद्गी
तामे भि लिखा है। सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृति
र्ज्ञानमपोहनं च वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः वेदान्तकृत वेद
विदेव चाहं॥ भलाजी॰ अगर पुराण षड्शास्त्र इतिहास स
नातन न होते ओर ४ वेदहि सनातन होते। तो वेदैश्च सर्वै
येह पाठ यहां क्युं लिखते वेदैश्चतुर्भिरहमेव वेद्य ऐसा पा
ठ क्युं नही लिख दिया चतुर्थ्य को नित्य बहुवचनता है संख्या
वाचक शब्द है ऐसा लिखदेनेमें क्या हर्ज था। केवल ४ वेदों
का जिस्से बोध होता था॰ ऐसा शब्द क्युं नहि लिखा। वे
दैश्च सर्वै येह पद यहां क्युं लिखा वस येह कहने पर तो वादी
को जो हास्य भ होगइ किं चिता विन कह सका कहैं व्यास
चे होते तो कुछ कहते भलस्फुट केकवि विपै रन हीं अरेभा
रव्युं बुद्धि पर जाल डाला है यहां वेदैश्च सर्वै येह जो पद
है केवल इसी वास्ते है के वेद ओर वेदांग पुराणादि स्मृ
ति इतिहास इन्हका कर्ता हूं मैंहि व वेद्य जानो हि। देख
येइस्से भि पुराण॰ अनादि सिद्ध होते है तुम्हारी॰ अक
ल कहां जाति रहे सनातनको मै हटने लगगये नवीनो
सनातन वाना नेलगगये वाहि [illegible] दिन ओर
दिनको राजन [illegible]

...स्य मध्यापम... ...योगिति द्वितीयवर प्रभ... ...ध्ये चतुर्थस... ...गेवं न

...मात्स्याउतामुख्ययाना... ...गयुग...

विष्णुमक विश्वासि वैश्वानरासो ... पर्यन्ते जायमाने विशन्तु ...

...जपक्रसर्गः प्रजा ... विश्वा... दस सौम्ये वंन विभिन्न खल...

...पेति ९ ... परं वैदित ... रगविकारो स्याल्यज्जस्य यथा नम

नादश्चैत्य सोप व्याख्याने पुरुष... र्थः ... धानांतस्थः ... भोक्ता प्राकृत...

भुक्ता इति तस्या ये भूतात्मा ... नप्रधान तस्मा ~~...~~

... त्रिगुणां भोज्यं भोक्ता पुरु... तस्यो ... नाम प्रत्यय ... यस्मा

... बीजसंभवा हि पर... तस्माद्बीजं ... र्यं मतं तैन प्रधानस्य भोज्यं त्वं ...

...व्याख्यानं जस्य ... भोक्ता पुरुषो भो... प्रकृति स्त... भोक्ता इति आ...

मतं त्रिगुणां ... विशेषान्तलिंग पर्यन्ते नैव च तु ...

विधस्य भाउस्य व्याख्या कृता भवति ... खद्वसमो हसं ... नाम दज

गत्र प्र. पत्र. १४ ३३ म ८९ मि महि... भाष्याभिप्रेत: द्विनारांशं संज्ञानः सवनं

द्वितीयेन रांशं संमाध्यन्दिनं सवनं ... नारांशं तृतीयं सवनं एषा नाराशंसं

पंक्तिः त्रीणि सवनानि॥ ततो रभानंतर ... ति ... प्राणायाम ...

... तथा च सर्वमेते ... देवतं ... यम ...

...विनियोगः ... तथा च श्रुतिः ... सर्वानि प्राणान् ...

...भावः ... ति ... ति ... हते जग

... ब्रह्मा ... पति जगदिति ... कषे गतो ... ऋषिः पूर्वसाधयि

... गायत्री छन्दः सर्वेषां मंत्र वर्णानां ... छन्द उच्यते अग्निर्देवता॥

... जगती ... गति गच्छति सर्वान् प्राणिनं ... तर वासि ... त्वेन ...

देवता देवो मंत्रात्मा यदाह याज्ञवल्क्यः ॐकारः परमं ब्रह्म सर्वमंत्रेषु नायकः

प्रजापतेर्मुखात्मन्न ... ने ... पात ... ब्राह्मार्षस्वयं

भुव: गायत्री च ... सर्व ... विविधे ...

... तथा च श्रुतिः यो ह वा नाधि

... कर्मसु विनियोगस्तु दृष्टः ... वाध्यापयति ...

... गतर्दैवतार्ष पंचछंदो ब्राह्मणेन मंत्रे ... नीति ... ब्रह्म ... वर्षि

... पीयान् ...

... स्थानस्य चतुर्थपं ...

... भवति यज्ञ ... मज्ञा ...

सैतावेरचिंतायांमाम

अलध्यमनध्यसर्वमेतिमलवाम ...: भभातन्चादिनांतेतन्याद्धसंध्याप्यित्त प्रसूः
प्रान्हापरान्हमध्यान्हास्त्रिसंध्यमथ शर्वरी ३॥ अथ यामिरम्भः प्रातःप्रवर्तते प्रभा
ते आदिकर्मणि क्तः षष्ठदिनस्यांते तिसमोपपतिदिनम् प्रांतकर्माणि श्यवबंध
नित्यः साथः कांडदिनांते च मांतम्‌ पंत्वव्यपवर्गवस्यति एकादिनांतस्य
सम्पुगध्यायंत्यस्यां ध्येचिंतायां सर्गोपसर्ग इत्यड संध्यापितप्रसून
घंतरयोयुगसंधिप्रवृत्तिर्यकारापि योपन्तेस्यां डुधाञ्धारणपोषणयो इति
अड संध्यापितप्रसूःसंध्या इति वा शर्वरी वृःपिन्नप्रसूते विप देसंध्यास्याः
अहः शब्दस्तदपेन प्रथमे च तदह प्रान्हः राजेतिठच अन्होन्ह इत्यन्हादेशः
अन्होदंतादिति णत्वं अन्हः अपरान्हः पूर्वापरं त्वचादेशसमासः
प्रन्होमध्यं संख्याविसायरंतिः पूर्वकालसमासः रात्रान्हाहाः पुंसि
मध्यं चतदहश्चेति वा तिसृणां संध्यानां समाहारः आवंतोवेति
पालिकादीः ता पते त्रिसंध्यं एकदिनाद्यंतमध्यानां श्रणाति
हिंसा अष्टहिंसायां कृत्य च तिभ्यः श्वरच यिङोरित्ति ङीष
शार्वरीयामिनो यो अत्रायः शार्वर्यपि शर्वरी शार्वरी शार्योते
शब्दार्णवः तदुक्तं संस्कारमडले॥ त्रिसंध्यं जपतां तेन सावित्रीं नैभरस्वयं
आदित्यं ध्यायतां कार्यः संकल्पपापं दानं इति॥ अथ ध्याई. स. ११४०. सायं
चिरं प्राह्णे प्रगे ऽव्यये भ्यस्त्युट्युलौ तुट् च॥ इति॥ सायमित्यादिभ्यश्च तुर्भ्यो
ऽव्ययेभ्यश्च कालवाचिभ्य ट्युट्युलौ स्तः (प्र) तुट् च॥ सायं (संध्या) चिरं (बहुत का
ल) प्राह्ण (दिनका पूर्वार्ध) प्रगे (प्रातःकाल) इन चार शब्दों से परं तथा कालवाचक अव्य
यों से परे ट्यु (अ) ट्यु (अ) प्रत्ययहों और उनको तुट् हो॥ आर्य श्री राम पर्णा वाल
का पौ ... तृतीयः सर्गे भूषण टीकायाम् ॥ पञ्च १० श्लो. ३ स मुहूर्तं गते तस्मिन्नारदे नरदेवलोकं गते
सदा॥ जगाम तमसातीरं जान्हव्यास्त्वविदूर तः इति मूलकार॥ तस्मिन्नारदे देवलोकं गते सति म
हर्षिःस्व आश्रमे स्थित्वा पश्चात् मध्याह्नि कार्यं जान्हव्याः अविदूरतः समीपे वर्तमानं तमसा
तीरं जगाम॥ उपदेशसहस्रीसमन ... प्रभा ... चित्रकीर्ति ...

ग. म. सन्ने निवाना जलगाय बालो ... सा मधरराना दिनमोर
... दिनकोरागवालनेरो ...

...ज्योतिः ... तोयवर ... चतुरश्यस...
...परत्वाद् मख्यापारन्याउ तामुख्ययाना ... गगपु... ...गोत्वं न

तैत्तिरीय पत्र ३८ अ १ मंत्र आपपुनंतु पृथिवींपृथिवी पूताषुनातु मां पुनंतु ब्रह्मणस्पतिः पुन
तु ब्रह्मणस्पतिः टीका ॥ ब्रह्मणश्चतुर्मुखस्य वेदस्य वापतिर्नारायणः पृथिवीं पुनं
त्वित्यर्थः पुनात्विति वचनव्यत्ययश्छांदसः ब्रह्मपूता पुनातु मां ॥ टी ॥ ब्रह्मणापर
मात्मना पूता पृथिवी मां पुनात्वित्यर्थः यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम
सर्वं पुनंतु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहं स्वाहा स्पष्टोर्थः अयं च मंत्रः सोमा चमनेविनि
युक्तः गंधाविशेषानुवाकः अग्निश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षंतां
॥ टी ॥ मन्युः क्रोधः मन्युपतयः क्रोधप्रवर्तकाश्च तु यदुच्च क्रोधकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षं
तामित्यर्थः ॥ यद्ह्रापापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अह
स्तदवलुंपतु यत्किंचिद्दुरितं मयि इदमहं मामम्रुतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि
॥ टी ॥ ब्रह्माशिश्नेन इत्यर्थः मनोवागादिना अह्निकृतं पापं अहर्देवतावलुंपतु छि
नं तु नाशयत्वित्यर्थः इदमहं मामम्रुतानां मुक्तानां योनौ स्थाने सत्ये ब्रह्मणि
जुहोमि समर्पयामीत्यर्थः अयं च मंत्र अपामाचमने पापशोधकत्वेन विनियुक्तः
सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षंतां यद्रात्र्या पापमका
र्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुंपतु यत्किंचि
दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा पूर्ववदर्थः सर्वप्राणि
सूत्रिहेतुत्वात्परमात्मनः सूर्यत्वं अपात्वित्यनुवाको गायत्र्यावाहने विनियु
क्तः कठवल्लिषु ॥ पत्र ४ अ १ पं १ ॥ पुनरपि कर्मस्तौति ॥ मंत्र त्रिणाचिकेतास्त्रि
भिरेत्य संधिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू ॥ त्रिणाचिकेतः अयं वाव पवते इत्या
द्यनुवाकत्रयाध्यायी त्रिकर्मकृत यजनाध्ययनदानकृत पाकयज्ञहविर्य
ज्ञसोमयज्ञहृत् त्रिभिरग्निभिश्चिरनुष्ठितैरग्निभिः संधिं परमात्मनैक्यपा
प्तः संबंधमेत्य प्राप्य जन्ममृत्युतरतीत्यर्थः करोतिलक्षेन पुनर्जायत
इत्यनेन व्याख्यातम् एवमेव ह्रस्वयं मंत्र व्याख्यानमेव चेवमुपन्यासः प्रश्न इति
सूत्रे व्यासार्थो विवृतः त्रिभिरेत्य संधिमिति निर्दिश्य मंत्रखंडः विशेषणं चेति सूत्रभाष्ये
सतमाह ॥ ब्रह्मयज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्य तं देवमीड्यं विदित्वा जीवा
...मो जीवः ब्रह्मणो जात... ...
...त्वाकरणं... ...छ ह्यज्योतिषमिति...

...धिगम्यते यतद् दुष्प्य मगाहस... ...त्रमवया...

त्मानमुपासकेब्रह्मात्मकत्वेनाभगन्नित्यर्थः इतिविवृतः देवशब्दस्यपर
मात्मवाचित्वयाजीवपरत्वेव्याख्यासंभवादत्रत्यदेवशब्दस्यपरमात्मक
त्वपर्य्यंतोर्थ इतिभाष्याभिप्रायः निचाय्येमां शांतिमत्यंतमेति॥ निचाय्य ब्र
ह्मात्मकंस्वात्मानंसाक्षात्कृत्य इमां त्रिकर्मकृत् इतिपूर्वमंत्रनिर्दिष्टां संसाररूपानर्थ
शांतिमेतीत्यर्थः त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा त्रिणाचिकेत उक्तोर्थः त्रयमेत
द्विदित्वाब्रह्मयज्ञंदेवमीड्यमिति मंत्रनिर्दिष्टं ब्रह्मस्वरूपं तदात्मकस्वात्मस्वरूपं
त्रिभिरेत्यसंधिमितिनिर्दिष्टाग्निस्वरूपंचविदित्वा गुरूपदेशेन ज्ञात्वा वा ज्ञात्वा
यएवंविद्वांश्चिनुतेनाचिकेतमेतादृशार्थानुसंधानपूर्वकंनाचिकेतमग्निंचि
नुते समृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य मृत्युपाशान् रागद्वेषादिलक्षणान्पुरतः शरीरपातात्
पूर्वमेवप्रणोद्य अपनीय स्वकृत्य जीवद्दशायामेव रागादिरहितःसन्नित्यर्थः शोकातिगोमोद
तेस्वर्गलोके पूर्वमेवव्याख्यातः यो वाप्येतां ब्रह्मयज्ञात्मभूतां चितिं विदित्वा चिनुते नाचि
केतम् एवंभूत्वाब्रह्मयज्ञात्मभूतः करोति तद्धेतुपुनर्नजायते इत्याचितिंब्रह्मयज्ञात्मभू
तां विदित्वा ब्रह्मात्मकस्वरूपतया अनुसंधाय यो नाचिकेतमग्निं चिनुते स एव ब्रह्मात्मक
स्वात्मानुसंधानशालीसन् अपुनर्भवहेतुभूतं परं भगवदुपासनं तदनुतिष्ठतीति॥
तत्रब्रह्मणो भगवदात्मकस्वात्मत्वानुसंधानपूर्वकमेव चयनं त्रिभिरेत्यसंधिं त्रिकर्म
कृत्तरतिजन्ममृत्यू इतिपूर्वमंत्रे भगवदुपासनद्वारामोक्षसाधनतया निर्दिष्टं नान्यदि
तिभावः॥ प्रथमंत्रके प्रचिकेशोक्षयत्दृष्टः केष्टत्याकत्वश्च अथापि प्रत्ययोतत्तमे
व्यासार्य्यादिभिरेवव्याख्यातत्वान्नप्रसेपश्शंकाकार्या एषतेऽग्निर्नचिकेतस्स्वर्ग्य इति परि
हः इतिशेषः यमवृणीथा द्वितीयेन वरेणास्य ओर्थः किंच॥ एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यंति
जनासः जनास्तवैवनाम्नाएतमग्निं प्रवक्ष्यंतीत्यर्थः तृतीयंवरं नाचिकेतो वृणीष्व
सयोर्थः ननु चैत एतस्य अग्नेर्गतानां स्वर्गशब्दानां मोक्षपरत्वे किं प्रमाणमिति चेदुच्यते
भगवताभाष्यकतास्वर्ग्यमग्निमिति नत्वं प्रस्तुत्य स्वर्गशब्दे नात्र परमपुरुषार्थलक्षणः
मोक्षोऽभिधीयते स्वर्गलोका अमृतत्वं भजंतेति तत्रस्थस्य जननमरणाभावश्रवणात्
त्रिणाचिकेतः त्रिभिरेत्यसंधिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू इतिप्रतिवचनात्तृतीय
वरप्रश्ने नचिकेतसा तद्विफलानां निर्दिश्यमानतया तद्विफलविरुद्धेन नचिकेतसा द्वितीय
सुखफलसाधनस्य प्रार्थ्यमानत्वानुपपत्तेश्च स्वर्गशब्दस्य प्रकृष्टसुखवद्वचन
यानिरतिशयानंदरूपमोक्षस्य स्वर्गशब्दस्य वाच्यत्वसंभवादिति कंठतस्तात्पर्य्य
... नतिपादितत्वाच्च नत्वं तद्वाकारः ननु स्वर्गेलोके न भयं किंचनास्ति न तत्र त्वं न जरया
... भवनानाविभ ... केर ... नग्योर

[illegible]

मायेन [illegible] गतिर्द्वितीयवर प्रश्न [illegible]

त्परत्वं किं मुख्यपारत्याउतामुख्यपाना [illegible] मोभिः प्रतिस्थपति स्मात [illegible] इति

तत्मात्स्यवदा तन [illegible] नामकुंको परे स्वतन्त्र स्वर्गलोक इति मं [illegible]

धा [illegible] विहितस्यापहत्यापत्वादि [illegible] लगुणाश्रवास्येव [illegible] हराभुचितं

स्वर्गलोकामृतत्वं भजेत इत्यनेन द्वितीयप्रश्नमिते [illegible] भाव [illegible] तश

दस्या [illegible] सेमोस्प एव प्रकोमाद जोवनामम [illegible] नोद्य वामृतशब्दस्यापि मु

त्यपरत्वेनापेक्षितामृतत्वपरत्वाभावादुत [illegible] मतोमया नाचिकेतःजो [illegible]

मित्येद [illegible] प्रश्नवाननिस्मानन्यं [illegible] निजीर्षतां पारंनाचिकेतं [illegible] के महि

तिपरस्यैव ब्रह्मणो नाचिकेताग्निज्ञाप्यका [illegible] पनेन [illegible] शब्दस्य [illegible] सि

[illegible] स्वर्गपरत्वाभावान्नास्यंतस्मान्नचिकेता वृणीत इति अस्तेतरावमुखजया प्रति

पादितस्य नाचिकेतसः स्वपिस्तु स्वर्गप्राप्तिर्नोपपत्ते [illegible] स्यं वापूर्वचोद [illegible]

लोकवादस्य [illegible] समसंख्याकयोः परस्परविरोधे [illegible] मुख्यस्य प्रावल्यं [illegible] स्यवे

[illegible] संभवति बहु [illegible] प्रयोगवचनः [illegible] नजघन्यानां भूयस्त्वंतव

भूयसां स्यात्स धर्मत्व [illegible] न्यायमेव प्रवर्तति इति एवं [illegible] मांसके [illegible] तवात

[illegible] विद्यायां एष ह्येव साधुकर्मकारयति एष लोकाधिपतिरेष लोकपाः [illegible]

[illegible] रेण्वत [illegible] पसंहारिक परमात्मधर्मबाहुल्येन [illegible] कृतजीवलिंगवाध

[illegible] स्तवाजगमादित्यत्र प्रतिपादितत्वादित्यलमतिचर्चया [illegible] मनुसरण

माहो [illegible] पत्र ४ प्र २ पं १२ त्रिकालसंख्याकथिता ॥ तथ [illegible] मैत्रायणी

[illegible] पत्र ८ प्र १ पं प्रथमांसप्रमप [illegible] त्रिकालपजनेति कथ्यते ओमिति

[illegible] विद्यायां [illegible] इति [illegible] स्वरूपेश्वरो वि

स्त्रीपुंनपुंसकेति लिंगवत्येषा प्याग्निर्वायुरादित्य इति [illegible] वत्येषा [illegible]

[illegible] हत्यो [illegible] हवनीया इति मुखवत्येषाथ

[illegible] पतिरवत्येषा [illegible] इति लोकवत्येषा [illegible] भव्यं भवि

[illegible] विज्ञानवत्येषा [illegible] भुवः [illegible] इति

[illegible] लिकालवत्येषा [illegible] सूर्य इति [illegible] वत्येषा [illegible] पानो [illegible] इति

प्यायनवत्येषा [illegible] बुद्धिर्मनोहंकार इति चेतनवत्येषा [illegible] पानो [illegible] तहै सत्य

[illegible] भवंतीत्येवं [illegible] मार्सी [illegible]

कामपरं चापरं च ब्रह्मपदो [illegible] इति [illegible] स्वरित्येषे [illegible] प्रजा

त्ये प्रजापतिस्तपस्तप्यान [illegible] भुर्भुवः [illegible] सवरित्येषेवास्य प्रजा

पतेः स्थविष्ठा तनूर्या लोकवतीति स्वरित्य [illegible] भुवो भूः पादाः आदित्यो

[illegible] नाहि पुरुषस्य महती मात्रा [illegible] यंमात्रा [illegible] तिसत्यथं वैस्व

[illegible] यतद्देश्य [illegible]

रण्यगर्भस्य नाभिः पुरुषः सर्वाधीश्वरस्तस्माद् भूर्भुवःस्वरित्युपासीतानेनाह
प्रजापतिर्विश्वात्मा विश्वसृड्ढरिरेवोपासितो भवतीत्येवं ह्याह प्रजापतिर्विश्व
मिदं सर्वमन्तर्हितमस्मिन् सर्वस्मिन्नेवान्तर्हितस्तस्मादेवोपासीतेति ॥ तत्स
वितुर्वरेण्यमिदं सर्वमन्तर्हितमस्मिन् सर्वाणि भूतानि नित्यमेवोपास्यः
सविता सवात्सर्वं प्रसूते यश्चात्मा कामिनेत्याह ब्रह्मवादिनोऽथ भर्गो देवस्य धीम
हीति सविता वै देवस्ततो योऽस्य भर्गाख्यस्तं चिन्तयामीत्याह ब्रह्मवादिनोऽथ धियो
यो नः प्रचोदयादिति बुद्धयो वै धियस्ता योऽस्माकं प्रचोदयादित्याह ब्रह्मवादिनो
ऽथ भर्ग इति यो ह वा अमुष्मिन्नादित्ये निहितस्तारकोऽक्षिणि वैष भर्गाख्यो भाभि
र्गतिरस्य हीति भर्गो भर्जयतीति वैष भर्ग इति रुद्रो ब्रह्मवादिनोऽथ भ इति भा
सयतीमाँल्लोकान् र इति रञ्जयतीमानि भूतानि ग इति गच्छन्त्यस्मिन्नाग
च्छन्त्यस्मादिमाः प्रजास्तस्माद् भरगत्वाद् भर्गः शश्वत्सूयमानात् सूर्यः सवनात्स
विता आदानादादित्यः पवनात्पावनोऽथापोऽप्यायनादित्येवं ह्याह खल्वात्मनोऽऽत्म
नेताऽमृताख्यश्चेता मन्ता गन्तोत्स्रष्टानन्दयिता कर्ता वक्ता रसयिता घ्राता द्रष्टा श्रोता स्प
ृशति च विभुर्विग्रहे संनिविष्ट इत्येवं ह्याह अथ यत्र द्वैतीभूतं ज्ञानं कार्यकारण
कर्मनिर्मुक्तं निर्वचनमनौपम्यं निरुपाख्यं किं तदवाच्यं ७ एष हि खल्वात्मेशानः
शम्भुर्भवो रुद्रः प्रजापतिर्विश्वसृग् हिरण्यगर्भः सत्यं प्राणो हंसः शास्ता विष्णुर्ना
रायणोऽर्कः सविता धाता विधाता सम्राडिन्द्र इन्दुरिति य एष तपत्यग्निरिवाग्निना पि
हितः सहस्राक्षेण हिरण्मयेनाण्डेन एषो वै जिज्ञासितव्योऽन्वेष्टव्यः सर्वभूते
भ्योऽभयं दत्त्वारण्यं गत्वाऽथ बहिः कृत्वेन्द्रियार्थान् स्वाच्छरीरादुपलभेतैनमिति विश्व
रूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपन्तं सहस्ररश्मिः शतधा व
र्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः तस्माद् वा एष उभयात्मैवं विद्वानात्म
न्नेवाभिध्यायत्यात्मन्येव यजतीति ध्यानं प्रयोगस्थं मनो विद्वद्भिः ष्टुतं मनः पूति
च्छिष्टापहतमित्यनेन तस्मादपेत् उच्छिष्टोच्छिष्टोपहतं च पापापहतं मनः प्रक्षा
ल्य वसोः पवित्रमसि सावित्रं प्रथमः पुनन्तु जनमत्यन्तं च यदन्यत् पुरस्ता
त्परिदधाति प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा समानाय स्वाहा उदानाय
स्वाहेति पञ्चभिरभिजुहोति अथावशिष्टं यतवाग्भक्षयत्यतोऽद्भिः भूय एवोपरि
ष्टात्परिदधात्याचान्तो भूत्वात्मेज्यानः प्राणोऽग्निर्विश्वोऽसीति च द्वाभ्यामात्मा

तस्यमध्यापमत्तु ... मेव ह स्वर्ग ...
... थेन नृकेत्तरेणातिद्वितीयवर प्रश्न ... शब्दे चतुर्थस्य ...
त्तपरत्वं किं मुख्यपारम्यात उत्तामुख्ययाना ... स्वर्गापवर्गमार्गाभ्यां स्वर्गापवर्गयोरेवांन
स्वर्गनापुनर्भवे सस्वर्गस्या स्यात्सर्वानुभूत्यविशेषत्वादित्याहिप्रयोगेऽप्यपवर्ग ... प्र
सिद्धत्वाचितया लोकवेदप्रसिद्धस्य स्वर्गप्रा ... स्यमोक्षवाचित्वाभावात् ध्रुवसूर्य
त्तरं यत्तु नियुक्तानि चतुर्दशस्वर्लोकस्तोत्र ... चितो लोकसंस्थानचिंतकैरीतिपुरा
णवचनानुसारेण सूर्यध्रुवांतर्वर्तिलोकविशेषस्यैव स्वर्गशब्दवाच्यतयात्रैव
लौकिकवैदिकव्यवहारदर्शनिनमोक्षस्थानस्यात्तथात्वान्नाप्यमुख्ययेति द्वितीयः
पक्षः अन्यार्थे बाधकाभावात् किमत्र प्रश्नवाक्यगतजरामरणराहित्याम्नत्वेभो
पक्षः अर्थाद्ये बाधकाभावात् किमत्र प्रश्नवाक्यगतजरामरणराहित्यामृतत्वभो
क्तादिकं बाधकं उत्तश्रुतिवचनगतं जन्ममृत्युतरणादि उत्तम्यपि स्वर्गस्य सर्वकामविम
खनाचिकेतसा प्रार्थ्यमानतानुपपत्तिर्वा ... स्वर्गलोकवासिनां जरामरणक्षुत्पिपासा
साशोकमोहादिराहित्यस्याम्नत्वगन्नादन्तन्त्र पाद्मेषु पुराणेषु रूपकथनप्रक
रणेषु दर्शनात् आभूतसंप्लवं स्थानं अमृतत्वं हि भाष्यत इति स्मरणात् अत्रैव प्र
जीर्णर्ष्यतामम्नतानामुपेत्येतिमन्त्रान्यपञ्चनशब्दप्रयोगदर्शनाच्च स्वर्गलोकवा
सिनामेव ब्रह्मोपासनद्वारा ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले इति श्रुत्युक्तरीत्या अम
तत्वप्राप्तेस्संभवेन स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्ते इत्यस्योपपत्तेः ॥ आपेक्षिकामृतत्व
स्यत्वा लोकवेदनिरूढोपसंहारिकामृतशब्देन शारीरान्तकमृत्युस्वपनस्य यथा सिद्ध
विक्रेष्युवाचिलक्षणादस्यान्यथानुपपत्तिसंभवान्नाहि स्वतोऽभिरूपप्रस्तुतोऽभिरूपपद
स्वारस्यानुसारेणास्वस्तपरस्यायं तामिहप्य प्रस्तरपरत्वमाश्रियते नाद्वितीयः ॥
त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेतिसंधिं स्वर्गसाधनस्थैर्ग्यानिर्त्यस्यासे जन्ममृत्यू तरणहे
तुभूतत्वप्रतिपादनात्मकस्तोत्यत्रदर्शकवाक्यस्वर्गशब्दस्यमुख्यार्थपरत्वाबाधक
त्वात्तत्वं तत्त्वार्थत्वकरोति तृतीयेन पुनर्जायते इत्यत्रापि न स्वर्गशब्दे
स्यार्थबाधकत्वं नापि स्वर्गस्य फलान्तरविमुखनचिकेतसा प्रार्थ्यमानत्वा
नुपपत्तिरिति तृतीयः पक्षः स्वर्गसाधनाग्निप्रश्नमतिपुत्रगाहिते ... मृत्युना
अपुनरपि मोक्षसरूपे अनंतलोकाप्तिमथोप्रतिष्ठां त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य
संधिं त्रिकर्मकृत्तरतिजन्ममृत्यू इत्यादिना उपादितत्वात् इत्यलम् अन्यंवरं
नचिकेतो वृणीष्वेति निषेधे द्वितीयतः ... त्वाचस्थायां ... प्रमाणैर्हानिफल
निरधिकारस्वर्गस्वर्गधा ... बाधितोऽधिकारस्यात् किंच ... भावाम
मरणस्य स्वर्गादौ मरणभावाऽनिर्दाष ... दर्शनेन स्वर्गेनिर्दाषा अदर्शनात्स
... देवदन्ति ॥ परा चैव परा चैव तत्र अपरा ॥ ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवे ...
... व्याकरणं निरुक्तं छंदो ज्योतिषमितिहासपुराणानि ...
... धिगम्यते यत्तद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्ण ...

...रणस्य नाधिकारत्वेन स्वर्गो न...
...स्त वाक्यस्य ... धान्यत्वात् स्वर्गशब्दस्य ... वाक्यशेषेण बाधकांने
प्रयाप्युपक्रमाधिकरणन्यायेन प्राथम्यादुपक्रमगतस्य स्वर्गशब्दस्यैव प्रबल
त्वान्न च भूयसां स्यात्स्वधर्मत्वमिति न्यायेन भूयोनुग्रहार्थमल्पस्योपक्रम
स्य बाध्यत्वमस्त्विति वाच्यं आरम्भे चेति सूत्रे चोपसंहारैकवचनेपि सर्वथापि मुख्यस्य
वैशवत्यस्योक्तत्वात् स्वर्गशब्दस्य मुख्यार्थपरित्यागे न किंचित्कारणमिति । प्रत्यो
ये च्यते । स्वर्गशब्दस्य मुख्यं वैदत्यां प्रीतिवाचित्वं स्वर्गकामाधिकरणे नागृहीतावि
शेषणान्यायेन स्वर्गशब्दस्य प्रीतिवचनत्वमेव प्रीतिविशेषद्रव्यवाचित्वात्
सर्वेषां विशेषणवचनत्वमेव लाघवात् विशेषद्रव्यवाचनामित्युक्तं ननु
विशेषस्वर्गशब्दस्य नागृहीतन्यायेन प्रीतिवचनत्वेसिद्धेपि देहान्तरदेशान्तरभोग्य
प्रीतिवाचिता न सिध्येत् न च यस्मिन्नोष्णमित्यादि वाक्यशेषबाहुल्ये शस्य
स्वर्गस्य प्रीतिविशेषविशिष्टत्वात् तद्वाचितानिश्चय इति वाच्यं प्रीतिमात्रवाचि
त्वेन निर्णीतशक्तिकतया संदेहाभावेन संदिग्धे तु वाक्यशेषादिति न्यायस्या
नवतारप्रसंगादिति चेदुच्यते । यद्यपि लौकिकस्य स्वर्गशब्दस्य निर्णीतार्थता
तथापि लोकावगतसातिशयसुखवाचित्वेन साधनत्वं ज्योतिष्टोमादीनां स्यात्
तथा चाल्पधनेन राध्यासलभ्ये लौकिके तदुपायान्तरे संभवति न बहुधनेन राध्यो
ससाध्ये वक्रतरोपाये ज्योतिष्टोमादौ प्रेक्षावान्प्रवर्तेत इति प्रवर्तकत्वं ज्योतिष्टोमा
दिविधेर्न स्यात् अतो वाक्यशेषावगते निरतिशयप्रीतिविशेषे स्वर्गशब्दस्य
शक्तौ निश्चितायां वाक्यशेषाभावस्थलेपि यववराहादिवत् स्वार्थः लौकि
के सातिशयप्रीतिमात्रे तु गौणयोगादेव वृत्तेरुपपत्ते न शक्त्यन्तरकल्पना ॥
न च प्रीतिमात्रवचनस्यैव स्वर्गशब्दस्य वेदे निरतिशयप्रीतिवाचित्वमस्त्विति
वाच्यं निरतिशयस्याशक्यान्यतोनवगतत्वेन तत्रापि शक्यत्वभावेन स्वर्ग
शब्दस्य लोकवेदयोरनेकार्थता स्यात् यत्तु वैदिकप्रयोगानुरोधेन निरतिशयप्रीति
वाचितात् तदा सातिशये लौकिके प्रीतित्वसामान्ययोगात् गौणीरतिरिति मी
मांशकैः निरतिशयसुखवाचित्वस्यैव समर्थिततया मोक्षस्य स्वर्गशब्दवाच्य
त्वे विवादाभावात् पार्थशब्दस्यार्जुन इव तदितरप्रधानपुत्रेषु प्रचुरप्रयोगा
भावेपि पार्थशब्दमेवस्याप्तेत्वात् न पायसः तत्स्वर्गशब्दस्य सूर्यध्रुवान्तरवर्ति
लोकगतसुखविशेष इवान्यत्र प्रचुरप्रयोगाभावेपि वाच्यत्वान्नपार्थक्यंवत्
वहिराज्यादिशब्दानां संस्कृततरणाद्यनादिसङ्केतः स्वार्थे प्रयुज्यमानानामप्य

(आलोचनकार्यमाह ॥ स इति ॥ आत्मनानादिसंसृतसाधकावस्थ प्रजापति
वत्फलावस्थोपि स विराडात्मा अहमस्मि सर्वमिति अग्रे प्रथमं व्याहरत् व्याहृतवान् ॥
यस्मात् ततः तस्माद् अहंनामाभवत् यस्मादेवं तस्मात् तत्कार्यभूतोपि लोक एतर्हि एत
तस्मिन्नपि काले आमंत्रितः कस्त्वमिति पृष्टः अहं अयमिति एवाग्रे प्रथममुक्त्वाथा
नेतरं अन्यत् पिंडविशेषविषयं यन्नाम पुरुषस्य मातापितृकृतं भवति तन्नाम
प्रब्रूते कथयति एवं उपाधानार्थं प्रजापतेरहंनामोक्ता ॥ अथेदानीं पुरुषनाम नि
र्वचनमाह ॥ स यदिति स प्रजापतिः पूर्वस्मिन् जन्मनि साधकावस्थायां कर्माद्यनुष्ठा
नैरहमिति भावनया यो यस्मात् प्रजापतित्वप्रतिपत्तिपित्सु समुदायात् सर्वस्मात् पूर्वो
मुख्यः सन् कर्माद्यनुष्ठानैः कर्मासंगज्ञानलक्षणान् सर्वान् पाप्मनः प्रजापति
त्वप्राप्तिकारणप्रतिबंधभूतान् यत् यस्मात् औषत् अदहत् तस्मात्पुरुषः
एतद्गुणविज्ञानफलमाह ॥ ओषतीति ॥ प्रजापतिवदन्योपि यः कश्चिदेवं वेद पुरुष
... प्रजापतिरहमस्मीति उपास्ते सर्वे सोपि ओषति हन्ति दहत्येवाभिभवत्ये
व तं कं योस्मादेवंभूतोपासकात् पूर्वः प्रथमः सन् प्रजापतित्वमात्मनो बुभूष
ति भवितुमिच्छतीत्यर्थः ॥१॥ ग्रन्थाः बृहदारण्यके अ १ ब्रा ५ प ३८ अ २
पं ६ मं २ ॥ आप एवेदमग्र आसुस्ता आपः सत्यमसृजंत सत्यं ... त्यं ब्रह्म
ब्रह्म प्रजापतिं प्रजापतिर्देवाः ... सत्यमेवोपासते तदेतत् त्र्य
क्षरं सत्यमिति ॥ मु ना मु · प ११ म यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः
सर्वज्ञः सर्वविषयकज्ञानवान् सर्ववित् तत्तद्वस्तुगतसर्वप्रकारकज्ञानवान् स
र्वतः प्रकारतश्च सर्वविषयकज्ञानवान् त्वमस्मिन्मंत्रे भूतयोनेर्विधेयं ॥ अ
प्तत्वात् यस्य ज्ञानमयं तप इत्यनेनांशेन पूर्वमंत्रोक्तं तपः शब्दं विवृणोति यस्य
ब्रह्मणः संकल्पस्य ज्ञानव्यतिरेकेण जगत्सृष्ट्युपयुक्तं कर्मांतरं नास्तीत्यर्थः
(श्वेताश्वतरोपनिषत् ॥ अ · १ · मं २) ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गो
प्ता स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥ अथर्वणे यां प्रवदेत
ब्रह्मा अथर्वा तां पुरोवाचांगिरे ब्रह्मविद्यां स भारद्वाजाय सत्यवहाय प्राह भारद्वाजोंगिर
से परावरां ॥ शौनको ह वै महाशालोंगिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ कस्मिन्नु भगवो वि
ज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति ॥ तस्मै स होवाच द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद्ब्रह्म
विदो वदंति ॥ परा चैवापरा च तत्रापरा ॥ ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोथर्ववेदः शिक्षा
... व्याकरणं निरुक्तं छंदो ज्योतिषमितिहासपुराणानीति ॥ अथ परा ॥ यया त
... दधिगम्यते ॥ यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं तदपाणिपादं नि
... सर्वगतं ... भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः ॥ यथोर्णनाभिः

नाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधयः संभवंति यथा सतः पुरुषात्केश
लोमानि तथाक्षरात्संभवतीह विश्वं तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नमभिजायते अ
न्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतं यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः
तस्मादेतद्ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते ॥ इत्यथर्वणोपनिषद् ॥ १ ॥ श्वेताश्वतरे ॥ पत्र ३
अ० ३ यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं
स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ मुण्डकोपनिषद्) प० १ मं० १ ॥ यो ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव
चतुर्मुख इन्द्रादीनां देवानां मध्ये उत्पन्न इत्यर्थः ॥ (तदुक्तं तत्वानुसंधाने ॥) श्रुतिप्रमाणं
ॐ नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वभाविने यस्याज्ञया जगत्स्रष्टा विरंचिः पालको हरिः
संहर्ता कालरुद्राख्यो नमस्तस्मै पिनाकिने ॥

पुराणों का अनादित्व वर्णनं

तैत्तिरीयब्राह्मणे पत्र २३ ऋग्भाष्य भू० ॥ ऋतं च सत्यं इति ऋतस्य तंतु वित
तं विचिंत्य तत्पश्यत् दभवत्प्रजासृ ऋतस्य कर्मणो विचिंत्या वितत तंतु
व्याप्य स्थितं कर्मणः सूक्ष्मरूपं दृष्ट्वा अपश्यत् जीवसमवेत कर्मसाध्या
पूर्वा सृष्टिः सा सा भूत दनुरोधेन तदभवत्

जीव हित कपुरुष को इद्र अपन वज्र से वध करे अथर्व० कां० ८ मं० १

अथर्व० कां० ३ ॥ द्वि० प्र० ६ मं० २ ॥ मे पशु शब्द से देव मनुष्यादि पशु शब्द से

मां० शालवरां प्रलम्

विश्व श्चासौ नरश्चेति विश्वानरः स एवतिमक
प्रत्यय इत्यर्थः विश्वानर एव वैश्वानरः
आत्मशब्दो जीववद्ब्रह्मण्यपि वर्तते
वैश्वानर शब्दस्तु योगरूढ्या ब्रह्मण्येव वर्तते

ब्रह्मविद्याधिकार मोक्षप्राप्ति ब्रा
ह्मणको उपदेश सहस्त्री प्र० प०

शाहंकारत्ते तस्मादीश्वर एव वैश्वानरः

* ते देशास्ते जनपदास्त आश्रमास्ते च पर्वताः येषां भागीरथी गंगा मध्ये
याति सरिद्वरा ॥ (व्रालण प्रपंचत) काठवल्ली श्वेताश्वतरादौ श्रूयते ॥
ऋतं पिबंतौ सुकृतस्य लोके गुहां प्रविष्टौ परमे परार्द्धे छाया तपौ ब्रह्मविदो वदंति
पंचाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः अस्यायमर्थः सुकृतस्य फलभूतं यद्ब्राह्मणादिशा
रीरं तत्परस्यार्द्धं परब्रह्मण उपलब्धिस्थानम् तत्र परमं विद्याधिकारि
त शमदमादि युपेत त्वात्तोद्दिग्धत्वशरीरस्य मध्य स्थित हृदय पुण्डरीक
गुहां तां प्रविष्टौ ऋतशब्द वाच्यं ... जीवतौ छायातपवत्परस्पर विलक्षणौ
विदो वदंति ॥

जवाब देते हैं के भाई स्कंदपुराणों में देवीभागवत और श्रीमद्भागवत जो दोनों को गिन
ती किया है इन्ह दोनों में श्रीमद्भागवत को श्रेष्ठ कहा है देखिये स्कंदपुराण
से और पुराणांतर वचनों से प्रगट होता है श्रीमद्भागवतमाहात्म्य इत्यादिकों
12 स्मार्तकर्मकारि दामोदर शास्त्रि ने भी कंस भागवतों को श्रीमद्भागवत
जो १८ पुराणों के अंतर्गत है अपने व्यवस्थापत्र में श्रीमद्भागवत को श्रेष्ठ
लिखा है तिसी प्रकार श्रीरामाश्रमाचार्य ने भी दुर्जनमुखचपेटिका ग्रंथ
में श्रीमद्भागवत को श्रेष्ठ कहा है। श्रीपुरुषोत्तमाचार्य ने भी भागवत
शंका निरासादि ग्रंथ में पुनस्तथैव वर्णितम्॥ तथा शंकरमतानुयायिभि
र्मधुसूदनसरस्वती विष्णुपुरी प्रभृतिभिर्महानुभावैरपि ग्रन्थमेवं भगवद्भ
क्तिरसायनादावुट्टंकितम्॥ अपराकादि ग्रंथों के वचन में विष्णु ते आद
ले कर ब्रह्मा शिव इन्द्रादि देवता औं कि बडाइ स्तुति करने के वास्ते श्रीभा
गवतामृत संहितादि ग्रंथों के अनार्षत्व असुरत्वादि वचनों का कर्तु
अराह शास्त्रमर्यादा का उल्लंघ मूल नाहि इसी प्रकार जो देव वैष्णव
पुराणों के विषे इतर होर निंदा की है है। यह वादि का कथन है॥ जवाब॥
वादि भद्रं न पश्यति अरे भाइ वादि जो तुमने पूर्व कथन से श्रीमद्भागव
त ग्रंथों को निंदित किया है सो तुम्हारि निंदा से कुछ नाहि होता क्युं के लि
खा है निंदा न यं निंदितुं प्रवर्तते॥ भावार्थ ये है के निंदा जो है सो निंदि
त को इ निंद रूप होती है जो श्रीमद्भागवतादि पुराणों कि निंदा करते हैं
औ फिर उन्ही पुराणों को श्रवण करैं या पढैं तो उन्ह सुनने वालों को
निंदकों को वोह पुराण निंदा रूप फल देते हैं क्या कारण के उन्ह निंदक
पुरुषों कि निश्चय मंदा गति है इस वास्ते निंदकों को निंदक फल प्राप्त हो
ता है देखिये घंटाकर्ण शिवभक्त था विष्णु का नाम सुनकर कान ह
लाता था नाम नहीं सुनता था उसको क्या फल प्राप्त भया देख
ये अरे अज्ञानांध वोह जो तुमको अपराकादि ग्रंथों में दूषण प्रतीत होता है वोह तो
तुम्हारि भूल है वोह तो विधेयं तो तुम्हि तिन्यायेन विधेय स्तुत्यर्थं न तु तद्वि
धायकशास्त्रस्याप्रामाण्यमध्यवसातुं शक्यं इतरस्यापि तथात्वापत्तेः॥ सर्व
पुराणों को उच्छिन्नता प्रसंग है येह नीलकण्ठ अद्वैतवादि नीलकण्ठ चतुर्धा
रादिकों को भी टीका या मुक्त॥ इत्यपि पुराणयोः सप्रमाणयोः पुराणत्व
भेदेन मा संपुराणत्वमुपपुराणत्वं चास्येति देवीभागवतटीकाकार
ण

श्रीगोविंदं नमस्कृत्य सैंतरी भैरवनामक: ~~वेदव्यासमा~~ कुरुते ~~भाग~~ विमर्दनम् ॥१॥ श्रीमद्भागवतं नौमि यस्यैकस्य प्रसादत: अज्ञातानपि जानाति सर्व: सर्वागमानपि ॥२॥ श्रीभागवतनिष्पर्यटीकाद्वयं रचितं पादयो: श्रीधरस्वामिपादानां वंदे भक्त्यैकरक्षकान् ॥३॥ मंदा विदधति नूनं दोषान् गुणोज्झान् हरिपादसेवनं नंतं नंतं भृंगकेषु रटत्सु पिमधुप: सरसिजरसं तं संत्यजति ॥४॥ श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं किंपरिकृत: संदेह: भाषा ॥ कहते हैं के श्रीमद्भागवत पुराण नाम किसका है कहां से पैदा यस कुइ किसने बनाइ येह हमको संदेह है ॥ देवीभागवतं ब्रूयते शकंदे विभागवतं द्वितीयं कृष्णभागवतं चातो जायते संदेहो ऽनयो: भाषा ॥ हमको दो तरिह भागवत सुने हैं एक तो देवीभागवत और दूसरी कृष्णभागवत इस वास्ते दोनो में संदेह पैदा हुवा कि मन्ति व्यासकृतमिति देवीभागवतं श्रीमद्भागवतमस्ति व्यासकृतं च नान्यत् कुत: एतत् श्रुत्वाहं संदेह: अभिरुद्धिर्न तत्र एव देवीभागवतस्य श्रीमद्भागवतसंज्ञा नान्यस्य भागवतस्य कुतश्चत् श्रुत्वा मन गीतं तानि ॥ भाषा प्रसन्नार्थ ॥ के जव दो भागवत हैं इन दोनों मे कौनसी व्यासकृत है भागवत को श्रीमद्भागवत कहैं या देवी भागवत को श्रीमद्भागवत कहैं ॥ समि ॥ कि नहीं २ देवीभागवत की श्रीमद्भागवत संज्ञा नहीं हो सक्ती श्रीमद्भागवत तो वेदव्यासजी को जो अधर्व की है उसी का नाम श्रीमद्भागवत है और जो दैवी भागवत का नाम श्रीमद्भागवत नहीं क्युंके इसको अतीव्रकृत होने से और चारों वेदों को ने इस भागवत को प्रमाण किया है और भागवतों को श्रीमद्भागवत संज्ञा नहीं कांई से इनको अकृत और प्रमत्तगीत कथन किया है इस वास्ते श्री वेदव्यास निर्मित श्रीमद्भागवत साक्षात् मोक्षोपाय साधन मूल श्रीमद्भागवत को जानो ॥

श्रीव्यासकृत अष्टादशपुराणपरिगणन एवं श्रीमद्भागवतं सर्वं चेत्यादि

सर्वेषु पुराणेषु भागवतं नाम पुराणमेकमेव परिगणितं लोकेषु श्रीमद्भागवत देवीभागवताख्ययोर्ग्रंथयोर्द्वैप्रसिद्धयोरेकतरो व्यासकृताष्टादशपुराणांतर्गति इति जिज्ञासायां श्रीमद्भागवताख्यस्य भागवतस्यैव पुराणांतरत्व च नैर्निर्णीयते सांदे ॥ भाषा ॥ कहते हैं के श्रीवेदव्यासकृत अष्टादश यानि १८ पुराण जो गिनती करे हैं ब्रह्मपुराण विष्णुपुराण पद्मपुराण से आदि लेके १८ पुराणों मे श्रीमद्भागवत जो पुराण है इसको इस अर्थ कथन किया है ॥ वादि वह जो है के लोकों के विषे तो दो श्रीभागवत श्रीमद्भागवत दोनो प्रसिद्ध है तिन मे कौन सी मस्त है पहले अष्टादश पुराणांतर्गत

~~मधूनेयदस्य भवति स यत्पूर्वोऽस्मात्सर्वस्मात्~~

यच्चाधिकृत्य गायत्रीं वर्ण्यते धर्मविस्तरः ॥ वृत्रासुरवधोपेतं तत्
भागवतमिष्यते ॥ लिखित्वा तच्च यो दद्यात् हेमसिंहसमन्वि
तं ॥ (भाद्रपद) प्रौष्ठपद्यां पौर्णमास्यां स याति परमं पदं ॥ अष्टादशसहस्रा
णि पुराणं तत्प्रकीर्तितं ॥२॥ पुराणान्तरे च ॥ हयग्रीवब्रह्मवि
द्या यत्र वृत्रवधस्तथा गायत्र्या च समारम्भस्तद्वै भागवतं
विदुः ॥३॥ पद्मपुराणे अम्बरीषं प्रति गौतमोक्तिः ॥ अम्बरीष
शुकप्रोक्तं नित्यं भागवतं शृणु पठ स्वमुखेनापि यदीच्छसि भव
बन्धनं ॥४॥ (अथ ब्रह्मोत्पत्तिकथनम् बृहदारण्यके ॥ ब्राह्मण ४ पत्र
५ प्रं १ पं ३ मं १ ॥ आत्मैवेदमग्र आसीत्पुरुषविधः सोऽनुवीक्ष्य ~~नान्य~~
न्नात्मनोऽपश्यत्सोऽहमस्मीत्यग्रे व्याहरत्ततोऽहं नामाभवत्तस्मादप्ये
तर्ह्यामन्त्रितोऽहमयमित्येवाग्र उक्त्वाथान्यन्नाम ~~प्रब्रूते यदस्य भवति स यत्~~
~~पूर्वोऽस्मात्सर्वस्मात्सर्वान्पाप्मन~~ ॥ प्रब्रूते यदस्य भवति स यत्पू
र्वोऽस्मात्सर्वस्मात्सर्वान्पाप्मन औषत्तस्मात्पुरुष ओषति ह वै
स तं योऽस्मात्पूर्वो बुभूषति य एवं वेद ॥१॥ टीका ॥ एवं ज्ञानकर्मभ्यां प्र
जापतित्वप्राप्तिः व्याख्याता । इदानीमस्य प्रजापतेः फलभूतस्य जगत्सर्जना
दौ स्वातन्त्र्यादि विभूत्युपवर्णनेन तं स्तोतुं ज्ञानकर्मणोर्वैदिकयोः फलो
त्कर्षः । आत्मैवेदमग्र आसीदित्यादि पुरुषविधब्राह्मणेन तदिदमित्यतः
अतोऽनेन वर्ण्यते वक्ष्यमाणब्रह्मविद्याधिकारहेतुभूतवैराग्योत्पादना
य तत्प्रान्त्य वादार्थक्ष्म महर्षिभिरेव समर्प्यते ॥ यत्प्राप्ति पर्यन्ते च ज्ञा
नविषये सहनिहयदस्य सततोभावस्तस्मादात्मेति कीर्त्यत इति उ
पाधितो विपुरुषः स्वतन्त्र केवल इति ॥ इदं दृश्यमानं शरीरभेदजातम
ग्रे शरीरोत्पत्तेः प्रागात्मैवासीत् कस्यात्मनो ग्रहणमित्यत आह पुरुष
विध इति ॥ पुरुषाकारः शिरःपाण्यादिलक्षणमन्वादीनां तथा वि
राडात्मा स यजमानावस्थादर्शनात् तदनुपश्चात्तत्फलं विद्यको
॥ चतुरोऽहमित्यात्मोच्चारितः स्वरूपं सदस्य यत्किंचनांतरं नापश्यत

श्रीगोविंदं नमस्कृत्य सेतरो मेंपनामकः [illegible] कुरुते [illegible]
स्फुर्दनम् ॥१॥ श्रीमद्भागवतं नौमि यस्यैकस्य प्रसादतः। अज्ञाता नपि जानाति
सर्वः सर्वागमानपि ॥२॥ श्रीभागवतनिःश्रयपीठीकादृष्टिरदापयेः श्रीधरस्वा
मिपादाब्जं वंदे भक्त्यैकरसकान् ॥३॥ मंदा विदधाति नूनं हि पुरुणो हरिपादसेवनं त
न्ते मं द्रुमे [illegible] मधुपः सरसिजरसं तन्संत्यज्य ॥४॥ श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं
किमस्ति कुतः संदेहः भाषा॥ कहते हैं के श्रीमद्भागवत पुराण नाम किसका है क
हांसे पैदा य सहु इ किसने बनाइ ये हमको संदेह है ॥ देवीभागवतं श्रूयते श्रीमद्
भागवतं द्वितीयं भागवतं चातो जायते संदेहोऽनयोः भाषा॥ हमको दे
खा कि दो भागवत सुना है एक तो देवी भागवत और दूसरी श्रीमद्भागवत इस वा
स्ते दोनों में संदेह पैदा हुवा है ॥ किं मन्ये व्यासकृतं मिति देवीभागवतं श्रीमद्भा
गवतमस्ति व्यासकृतं च नान्यत कुतः एतत् [illegible]
[illegible] एव देवीभागवतस्य श्रीमद्भागवत संज्ञा [illegible]
[illegible] ॥ भाषा प्रश्नवादी॥ के जब दो भागव
त हैं इन दोनों में कौनसी व्यासकृत है भागवत को श्रीमद्भागवत कहें या देवी
भागवत को श्रीमत् भागवत कहें ॥ [illegible] वे नहीं २ देवीभागवत को श्री
मद्भागवत संज्ञा नहीं हो सकी श्रीमद्भागवत तो वेदव्यासजी को जो अधर की
है उसी का नाम श्रीमद्भागवत है और देवी भागवत का नाम श्रीमद्भाग
वत नहीं क्युंके इसको अतीशुद्ध होने से और चारों वेदों ने इस भागवत
को प्रमाण किया है और भागवतों को श्रीमद्भागवत संज्ञा नहीं काहे से
इनको अशुद्ध और प्रमत जीत कथन किया है इस वास्ते श्री वेदव्यास प्रणीत
श्रीमद्भागवत साक्षात् मोक्षोपाय साधन भूत श्रीमद्भागवत को जानो ॥
श्रीव्यासकृताष्टादशपुराणपरिगणने [illegible] पाद्मे च [illegible]
) चेत्यादौ
सर्वेषु पुराणवाक्येषु भागवतं नाम पुराणमेकमेव परिगणितं लोके तु श्रीम
द्भागवतं देवीभागवतं त्वं योर्द्वयोः प्रसिद्धं [illegible] व्यासकृताष्टादश
पुराणान्तर्गतिरिति जिज्ञासायां श्रीमद्भागवतमेव [illegible] पुराणान्तर्गत च
[illegible] ॥ भाषा॥ कहते हैं के श्रीवेदव्यासकृत अष्टादश यानि १८
पुराण जो गिनती करे हैं ब्रह्मपुराण विष्णुपुराण पद्मपुराण से लेके
१८ पुराणों में श्रीमद्भागवत जो पुराण है इसको इक्ष कथन किया है ॥
वादि कहता है के लोकों के बिच तो देवीभागवत श्रीमद्भागवत दो
नो प्रसिद्ध है तिन में कौन [illegible] व्यासकृत अष्टादश पुराणान्तर्गत

पदूर्तेयदस्य भवति स्यात्पूर्वोस्मात्सर्वस्मा
यत्राधिकृत्य गायत्रीं वर्ण्यते धर्मविस्तरः ॥ वृत्रासुरवधोपेतं तद्
भागवतमिष्यते ॥ लिखित्वा तच्च यो दद्याद् [illegible] हेमसिंहसमन्वि
तं ॥ प्रौष्ठपद्यां (भाद्रपद) पौर्णमास्यां स याति परमं पदं ॥ अष्टादशसहस्रा
णि पुराणं तत्प्रकीर्तितं ॥ २ ॥ पुराणान्तरे च ॥ हयग्रीवब्रह्मवि
द्यायत्र वृत्रवधस्तथा ॥ गायत्र्या च समारम्भस्तद्वै भागवतं
विदुः ॥ ३ ॥ पद्मपुराणे अम्बरीषं प्रति गौतमोक्तिः ॥ अम्बरीष
शुकप्रोक्तं नित्यं भागवतं शृणु पठ स्वमुखेनापि यदीच्छसि भव
क्षयं ॥ ४ ॥ (अथ ब्रह्मोत्पत्तिकथनम् बृहदारण्यके ॰ ब्राह्मण ४ पत्र
५ प्रं १ पं ३ मं १ ॥ आत्मैवेदमग्र आसीत्पुरुषविधः सोनुवीक्ष्य ~~नान्य~~
नान्यदात्मनोऽपश्यत् सोऽहमस्मीत्यग्रे व्याहरत्ततोऽहं नामाभवत्तस्मादप्ये
तर्ह्यामन्त्रितोऽहमयमित्येवाग्र उक्त्वाथान्यन्नाम ~~स ओषति ह वै स तं~~
~~योऽस्मात्पूर्वो बुभूषति य एवं वेद ॥ १ ॥~~ प्रब्रूते यदस्य भवति स यत्पू
र्वोऽस्मात्सर्वस्मात्सर्वान्पाप्मन औषत्तस्मात्पुरुष ओषति ह वै
स तं योऽस्मात्पूर्वो बुभूषति य एवं वेद ॥ १ ॥ टीका ॥ एवं ज्ञानकर्मभ्यां प्र
जापतित्वप्राप्तिः व्याख्याता । इदानीमस्य प्रजापतेः फलभूतस्य जगत्सर्जना
दि सर्वं तंत्र्यादि विभूत्युपवर्णनेन तं स्तौति ज्ञानकर्मणो वैदिकयोः फलो
त्कर्षः ॥ आत्मैवेदमग्र आसीदिति पुरुषविध ब्राह्मणेन तदिदमित्यतः
प्रतिनेन वर्ण्यते वक्ष्यमाणब्रह्मविद्याधिकारहेतुभूतवैराग्योत्पादना
य तत्रात्मवादार्थश्च महर्षिभिरेव समर्प्यते ॥ यच्चाप्नोति यदादत्ते यच्चा
त्ति विषयान् इह निह यदस्य सततो भावस्तस्मादात्मेति कीर्त्यत इति उ
पाधितो विग्रहः स तत्र केवल इति ॥ इदं दृश्यमानं शरीरभेदजातम
ग्रे शरीरोत्पत्तेः प्रागात्मैवासीत् कस्यात्मनो ग्रहणमित्यत्र आह पुरुष
विध इति ॥ पुरुषाकारः शिरःपाण्यादिलक्षणो मन्वादीनां तथावि
रागात्मा स यजमानावस्थादर्शनात् तदनुपश्यन्ते तत्फलं विद्यको
हं विलक्षणोऽहमित्यात्मानो व्याचष्टे तः स्वशरीरादन्यवस्त्वन्तरं नापश्यत

सईसित्तेति) सोजोब्रह्महै मायाकी श्रोर दूसरी कर्ता है के तुं जगत्को उत्प
नकरणतव माया जगतको उत्पत करने में ६ ॥ याहं व्यासजी का सूत्र प्रमा
णहै ॥ ईक्षतेर्नाशब्दं ॥ माया वो है दृष्टा ब्रह्म ही जगत्का कारण है माया नहीं इति)
शंका ॥ ऐसा तो जो वृ है उसका ध्यान क्यूं नहीं करते कहते हैं के नहीं जीव तो ज्ञान
पराधीन है ॥ हम तो स्वतन्त्रसिद्ध ज्ञान वान जो है तिसका ध्यान करें हैं ॥ ब्रह्मा
तो ब्रह्माजी है क्यूं के श्रुति मे लिखा है ॥ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जा
तः पतिरेक आसीत ॥ जगत के आद मे हिरण्यगर्भ ब्रह्माजी होते भये ॥ और सब
जीवन के पति हुये ॥ तिसपर कहते हैं के हम उस ब्रह्म का ध्यान करें हैं जिसने ब्रह्माजी
को वेद पढाया पेह श्रुति मे लिखा है ॥ श्रुति ॥ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वम् ॥ जीने
पूर्व ही ब्रह्मा को पैदा किया और वेद पढाया वोह बुद्धि का प्रकाश रूप देव थी हम
शरण को मुमुक्षु प्राप्त होवें ॥ ये कहते हैं के ब्रह्मां जी किसी के पास वेद पढने गये हैं
ये ह किसी पुराणांतर वचनों से प्रघट नहीं है ॥ जवाब नहीं भाई तुम्हारी बुद्धि मे
भ्रम है ब्रह्मा जी को वेद तो प्रभु ने मन के द्वारा ही पढाये हैं या पदते प्रघट होता है
के ब्रह्मा कि बुद्धि के प्रवर्तक प्रभु हैं यह गायत्री मंत्र का अर्थ दिखाया है ये ही बात
द्वितीयस्कंध मे एकदेव जी अपने मंगलाचरण मे कहेंगे ॥ प्रचोदिता येन पुरा स
रस्वती इति ॥ भावार्थ येह है ॥ के जिस विद्वान को जो विद्या अच्छी अभ्यासि
ता होती है उस विद्या कि निद्राकाल मे विस्मृति होजाती है जब जाग्रत मे आ
ता है तब पुर्व अभ्यासिक सम्बंधाभाव से फेर सब का स्मरण आ जाता है ॥
जब प्रलयकाल मे ब्रह्मा जी सोगये तो वेद विस्मृत होगये जब उठे तब फेर विस्मृ
त हुवे हुवे समरण होआये तिसपर कहते हैं के येह वेद रीसे सुगम नहीं है जो स्वतः
स्मरण हो आवे इस वेद पद मे बडे विद्वान मोह को प्राप्त होते हैं इस वास्ते ब्रह्मा
जी का ज्ञान वो पराधीन है हम तो स्वतन्त्रसिद्ध ज्ञानवान जगत्का कारण पर
मेश्वर है तिसका ध्यान करते हैं इसने वोह सत्य है और झूठे जगत को स
चा दिखा रखा है इसते परमार्थ सत्य है और वोह सर्वज्ञ है इसने माया
रूपी कपट उस पर ब्रह्म से दूर रहता है हम तो ऐसे परब्रह्म का ध्यान करते
हैं इससे प्रघट हुवा येह पुराण श्रीमद्भागवत गायत्री के अर्थ को लेकर
रचना गई है ॥ येह पुराण ब्रह्मसूत्रों [illegible] है ॥ और गायत्री को भाष्यरू
प कथन किया है ॥ [illegible] है ॥

पानीवोह छाया जिस आदमी की पडती थी उसी मे लीन होगई धूप मे या वृक्षा
दिकों मे वोह छाया लीन नहीं हुई कारण यह है जिसका जो प्रतिबिंब होता है वोस
प्रतिबिंब अपने अधिष्ठान मे ही लीन होता है इसवास्ते जिस ब्रह्म की सत्ता से वोह
अमिथ्या प्रपंच सत्य प्रतीती देता है वोह प्रपंच मिथ्या अन्तावस्था मे अपने
अधिष्ठान ब्रह्म मे ही लीन होगा इसवास्ते मिथ्यात्व धर्म ब्रह्म मे दर्शित होता है ॥
अब इसको निवृत्त करते हैं ॥ अपने तेज करिके सर्वकाल दूर भया है माया
लक्षण कपट जिस्से ॥ जैसे कमलपत्र को पानी मे भगोदे परंतु भ्रान्ति स्वछता
के संबंध से स्पर्श नहीं होता ऐसे इ मिथ्या प्रपंच की उपाधि परब्रह्म तेजवा
न अति शुद्ध को मल के स्पर्श नहीं होती ॥ शंका ॥ क्योंजी अंधकार मे जोर
रस्सी पडी है तिस मे जो किसी को सर्प प्रतीति भया सो वास्तव मे वोह प्रतीत
सर्प का और रस्सी का कोन संबंध है ॥ उत्तर कोई भी नहीं तैसे अधिष्ठान ब्र
ह्म मे अज्ञान की अवस्था मे जो प्रपंच भ्रम भया तिसका ज्ञानावस्था मे को
ई संबन्ध नहीं ॥ (अब तटस्थ लक्षण करके दिखलाते हैं) जैसे कि इस वि
श्व की उत्पत्ति पालन संहार जिस ब्रह्म मे होता है तिसका हम ध्यान करै हैं
जो घट पटादि पदार्थ मे सत्तारूप करके व्यापक है और अकार्य्य जो ख
पुष्पादिक तिन से न्यारा है ॥ अथवा प्रपंच को सत्तारूप ब्रह्म कारण है जैसे घ
ट का कारण मट्टी कुण्डलादि कनक को कारण सुवर्ण है तैसे इ ब्रह्म का
कार्य्य जगत है जैसे मट्टी का कार्य घटादिक और सुवर्ण का कार्य कुण्ड
लादिक जो जिसका कारण है वोह कार्य अपने कारण से भिन्न नहीं है
होता है ॥ अइस मे श्रुति प्रमाण है ॥ यतो वा इमानि भूतानि जायंते येन
जातानि जीवंति यत्प्रयंत्यभिसंविशंति ॥ इति भाषा जिस ते स
म्पूर्ण जीव पैदा होते है और पैदा हुये वि जिस्के जिवाये जीवै हैं और प्रल
य काल मे जिस्मे मिलते हैं और मुक्ती काल मे जिस्मे प्रविष्ट होय है
और स्मृति हुं प्रमाण है ॥ यतः सर्वाणि भूतानि भवंत्यादि युगागमे यस्मि
न्प्रलयं यांति पुनरेव युगक्षये ॥ भाषा युग के आदि ते जिस्से सर्व जीव
उत्पन्न होते है और युग के अंत मे जिस्मे लीन होते है ॥ कदाचित कोई
व्यासजी से यह प्रश्न करै कि असी तो माया है जगत की कारण तिसका ध्या
न क्युं नहीं करते ॥ तिसपर कहते हैं कि नहीं माया तो जड है हम
तो सर्वज्ञ का ध्यान करै हैं ब्रह्म को सर्वज्ञता मे श्रुति प्रमाण

आसेंकलियुगव्यासश्चकेयोनमतः॥ माहाभारतमारव्यानंसर्ववेदार्थ
संग्रहमित्यादितथाब्रह्मचर्यपारंभंको तथाव्यादुपास्यनेसर्वपवित्रणा

श्रीभागवतकलाव्रतारवर्णनम्

१

एकसमय श्रीवेदव्यासजी अनेकपुराण और अनेकशास्त्र तथा माहांभारतादि
प्रबंधनकर्केचित्तशांतिकोनपावतेभये तथा उनउनशास्त्रोंकेकहेभये सिद्धां
तोंमें अप्रशन्नहोतेभये भगवतके अंशावतार नारदजीके उपदेशते श्रीमद्भा
गवदुण वर्णनजिस्मेप्रधान ऐसेश्रीमद्भागवतशास्त्रकोरचतेभये तिस्केसर्व
आरम्भमेविघ्ननिवृत्तिकेअर्थ श्रीभागवतकेइष्टदेवको स्मरणरूपमंगलाच
रण करेहै जैसे हमसब शिष्यवर्गसहितपरमेश्वरकोध्यानकरेंहैं॥
अब उन परमेश्वरकूं स्वरूपलक्षण और तटस्थलक्षण करिकेलिखतेहैं तहां
पहले स्वरूपलक्षणकहेंहैं॥ कैसापरमेश्वरहैके तीनोकालमेंएकरससत्यरूपहै॥
जिसपरमेश्वरमेमायाकेतीन ३ गुण तिनकाकार्य (पंचभूतइन्द्रियदेवतारूपजोप्रपंच)
सोरूठोइप्रतीतहोताहै अथवा जिसअधिष्ठानब्रह्मकीसत्यताते असत्यजोप्रपंचसो
सच्चासाप्रतीतिदेताहै इसवास्तेवाहपरमसत्यहै याहांदृष्टांतहै किजैसेंकिसीकोवन
मेरात्रिकेसमयऊसरभूमीमेजलकाभ्रम और जलमेस्थलकाभ्रमहोजाताहै तथादि
नमेमरुमरीचिकामेजलदिखताहै तथा कांचमेजलदिखताहै प्रतीतहोताहै इत्यादि
भ्रमविषे अधिष्ठानकीसत्यतासेसत्यप्रतीतदेतेहैं ऐसेहि अधिष्ठानब्रह्मकीस
त्यताने झूठाप्रपंचसत्यप्रतीतदेरहाहै अथवाति सब्रह्मकोहीपारमार्थिकीसत्य
ताकहनेकेहेतुप्रपंचकामिथ्याभाववहाहै॥ जिसब्रह्ममेंवाहप्रपंचमिथ्याभाव
कोप्राप्रहैवास्तवमेकभीभीसतनहींहोयहै॥ इसबातकेकहनेसे अधिष्ठानब्रह्मम
मिथ्याप्रपंचरूपी उपाधिप्रतीतहै क्युंके जोसत्वपदार्थजिस्केसकाससेउत्पन्नहो
ताहै उस्मे उसीकासत्वकहलाताहै येनविनायदनुपपन्नंतत्तेनात्मयतेइतिन्या
येन यथा कनककुण्डलादिकमेकुण्डलजोनामहैसोमिथ्याहै परंतु अधि
ष्ठानउस्का कनकसुवर्णहीहै इसवास्तेकुण्डलकामिथ्यात्वधर्मसुवर्णमेंरहा
जैसेपुरुषकीछायाजोधूपमेपड़तीचली आतिहै वास्तवमेवाहछायामिथ्याप्र
तीतहैकुछवाह हैनहीं परंतु जब आदमीछायादरख्तकीकेतलेपहुंचातत
ववाहछायाजिस्के आभाससेया जिस्केजिरयसेप्रतीत दीतिथि